चण्डी दास

सुकुमार सेन

MT
891.441 52
C 361 S

भारतीय
...के

MT
891.441 52
C 361 S

चण्डीदासक पद बङ्गलाक प्राचीन वैष्णव पदावलीक मधुरतम गीतसभमे परिगणित अछि। किन्तु चण्डीदास के छलाह, आ की छलाह, ओ कतए आ' कहिया जन्म-ग्रहण कएलन्हि—एहिसभ प्रश्नक समाधान आइधरि बङ्गला भाषा ओ साहित्यक दिग्गज विद्वान् लोकनिक अथक अनुसन्धानक उपरान्तो नहि भय सकल अछि। चण्डीदासक पूर्वतम उल्लेख 'चैतन्य चरितामृत' मे पाओल जाइत अछि जाहिमे चण्डीदासक कनिष्ठ सहजीवी कृष्णदास कविराज लिखैत छथि जे चैतन्य अपन जीवनक परवर्ती कालमे जयदेव (संस्कृत कवि), विद्यापति (मैथिली कवि), ओ चण्डीदास (बङ्गला कवि)क गीत सभसँ प्रेमामृत पओलन्हि। एहिसँ चण्डीदासक समय मोटामोटी १५म शतकक उत्तरार्द्ध ओ १६म शतकक आरम्भ-भागक बीच कतहु सिद्ध होइत अछि। कालक अतिरिक्त, एहिमे चण्डीदासक नानाविधि परिचय ओ हुनक अनुकल्पक वृतान्त बड़ चमत्कारक भेटैत अछि।

डा० सुकुमार सेन, जे बङ्गला भाषा ओ साहित्यक इतिहासक परम आधिकारिक विद्वान् मानल जाइत छथि, एतए एहि सभ प्रश्नक विवेचन पंडितक प्रज्ञा कथाकारक सरसताक संग कएलन्हि अछि। डा० सेन चण्डीदासकेँ जयदेव ओ विद्यापतिक पंक्तिक चण्डीदास मानबाक पक्षमे छथि—जेना कि 'श्रीकृष्ण कीर्तन'क हुनक विशद परीक्षणसँ सिद्ध होइत अछि। अन्ततः ओ बड़ तथा द्विज दुनू चण्डीदासकेँ एक कोटिमे अनैत कहैत छथि व्रजक प्रेमलीला-वर्णनने एको चण्डीदास ककरहु सँ कम नहि छथि; दू चण्डीदासक तँ कथे कोन।

आवरण-सज्जा : सत्यजित राय

खाँचमे भनितामे चण्डीदासक नाम बाला श्रीकृष्ण कीर्तनक हस्तलेखिक दू पृष्ठक प्रतिकृति।

SAHITYA AKADEMI
REVISED PRICE Rs. 15.00

भारतीय साहित्यक निर्माता

चण्डीदास

लेखक
सुकुमार सेन

अनुवादक
गोविन्द झा

साहित्य अकादेमी

Chandidas : Maithili translation by Govinda Jha of Sukumar Sen's monograph in English. Sahitya Akademi, New Delhi (1983

SAHITYA AKADEMI
REVISED PRICE Rs. 15.00

Library IIAS, Shimla
MT 891.441 52 C 361 S
00117159

(C) साहित्य अकादेमी

प्रथम संस्करण : १९८३

MT
891.441 52
C 361 S

साहित्य अकादेमी

प्रधान कार्यालय

रवीन्द्र भवन, ३५, फ़ीरोज़शाह रोड, नई दिल्ली-११०००१

क्षेत्रीय कार्यालय

ब्लाक V-बी, रवीन्द्र सरोवर स्टेडियम, कलकत्ता-७०००२९

२९, एलडाम्स रोड (द्वितीय मंज़िल), तेनामपेट, मद्रास-६०००१८

१७२, मुम्बई मराठी ग्रन्थ संग्रहालय मार्ग, दादर, बम्बई-४०००१४

SAHITYA AKADEMI
REVISED PRICE Rs. 15.00

Indian Institute of Advanced Study
117159
10.12.04

मुद्रक :
शोभा प्रिंटिंग प्रेस
नया टोला, पटना-८००००४

विषय-सूची

१.	चण्डीदास के छलाह ?	३
२.	जीवन ओ तिथि : अन्वेषण ओ अनुसन्धान	१०
३.	कतोक रोचक कथा	१६
४.	सहजिआ गीत के लिखलन्हि ?	२६
५.	श्रीकृष्णकीर्तन	३५
६.	श्रीकृष्णकीर्तनसँ उद्‌भूत समस्यापर पुनर्विचार	५२
७.	उपसंहार	५८

ग्रन्थ-सूची

१. चण्डीदास के छलाह ?

वैष्णव पदावली वा गीत-साहित्य जाहि रूपमे सम्प्रति हमरालोकनिकेँ उपलब्ध अछि से मानू प्राचीन बंगला काव्योद्यानक प्रसून थिक, आ' ताहिमे सभसँ सुरभित अछि ओ गीत-सभ जाहिमे चण्डीदासक भनिता अछि। एहिमे प्रायः ककरहु वैमत्य नहि होएतैक जे बंगाली-लोकनिक जीवन ओ संस्कृतिमे बहुत किछु जे उत्कृष्ट अछि तकर श्रेय छन्हि मुख्यतः चैतन्यकेँ, हुनक व्यक्तित्वकेँ ओ हुनक कार्यकलापकेँ। चण्डीदासक नाम ओ कीर्तिकेँ काल-कबलित होएबासँ बचएबाक श्रेय अप्रत्यक्ष रूपेँ चैतन्यहिकेँ छन्हि। हिनक प्रामाणिकतम जीवन-चरितक लेखक ओ हिनक कनिष्ठ समसामयिक कृष्णदास कविराज लिखैत छथि जे चैतन्य वार्धक्यमे जयदेवक (संस्कृत), विद्यापतिक (मैथिली) ओ चण्डीदासक (बंगला) गीतसँ रसधारा प्राप्त करैत रहलाह। जयदेव भारत भरिमे विदित छलाह किन्तु अन्य दुनू कवि सीमित क्षेत्रमे ख्याति पओलन्हि। जँ चैतन्यक सर्वश्रेष्ठ जीवन-चरितकार चैतन्यकृत प्रशंसाक उल्लेख नहि कएने रहितथि तँ विद्यापति सम्भवतः आ' चण्डीदास अवश्यमेव ओहिना पूर्णतः तिरोहित भए गेल रहितथि जेना अन्य अनेकानेक नीक-नीक गीतकार-लोकनि भए चुकलाह अछि।

सोलहम ओ सतरहम शतकमे, शिक्षित वा साक्षर वैष्णवलोकनिकेँ छाड़ि, जन-सामान्यक हेतु बंगला साहित्य नामक कोनो वस्तु नहि छल; ओहिसँ पूर्वक शतक-सभमे तँ ककरहु हेतु नहि छल। बंगालमे पोथी केवल विद्वान्-लोकनि, वैष्णव गुरु-लोकनि आ' उपासक-लोकनि पढ़ैत छलाह; आन लोक केवल छोट वा पैघ गीत गएबामे तथा वाद्यक संग आख्यानात्मक गाथा गएबामे रस लैत छलाह, जाहिमे कखनहु-कखनहु कठपुतरीक नाच वा लीला सेहो रहैत छल। वैष्णव साहित्य छाड़ि आर सभ पढ़वाक वस्तु केवल संस्कृतमे (आ' प्रायः थोड़ेक फारसीमे) छल।

पढ़बाक हेतु बंगलामे सम्भवतः सभसँ पहिने जे पोथी लिखल गेल से थिक एही चैतन्यक जीवन ओ कार्यकलापपर रचित दुइ प्राचीनतम चरित काव्य, ओ ताहिमे दोसर पुस्तक कृष्णदासक **चैतन्यचरितामृत** तँ कहिओ गओल नहि गेल। एहि पुस्तकक प्रभाव आरम्भहि सँ बंगालक वैष्णव-लोकनि पर बहुत अधिक पड़ल, ओ एहिमे जँ रहस्य-मार्गक प्रतिपादन अछि तँ रागात्मिका पद्धतिक अनुयायी वैष्णव सम्प्रदायमे ई परम प्रमाण रूपेँ मान्य ओ गृहीत भेल। इएह रहस्यमार्गी वैष्णवलोकनि, जे बाउल (व्युत्पत्त्यर्थ 'पागल') वा सहजिआ (व्युत्पत्त्यर्थ 'सरल मार्गक अनुयायी') नामसँ सम्प्रति विदित एक सम्प्रदायक प्रवर्तक छलाह, अलौकिक नायक-नायिका राधा-कृष्णक लौकिक प्रेमक गीत रचनिहार तीन महाकवि चण्डीदास, विद्यापति ओ जयदेवकेँ अपन आदि गुरु मानलन्हि। कारण, हुनकालोकनिक विश्वास छलन्हि जे ई तीनू कवि अपन वैयक्तिक अनुभव द्वारा राधा-कृष्णक प्रेमक आस्वादन कयने छलाह ओ तकरहि अपन-अपन रचनामे निबद्ध कएलन्हि। तदनुसार मानल जाइत अछि जे एहि तीनूकेँ अपन-अपन प्रेयसीमे राधाक तादात्म्यानुभव छलन्हि। जयदेवक पद्मावती इतिहास-सिद्ध तँ छथि किन्तु ई निश्चयपूर्वक कहल नहि जाए सकैत अछि जे ओ जयदेवक विवाहिता स्त्री छलीह वा नहि। विद्यापतिकेँ अपन आश्रयदाताक पत्नी लखिमा (लछिमा)सँ प्रेम छलन्हि वा नहि तकर ने पक्षमे प्रमाण अछि ने विपक्षमे, दुनूक बीच सम्बन्ध एतवान्मात्र अछि जे दुनूक नाम कतोक गीतक भनितामे संग-संग आएल अछि। चण्डीदासक विषयमे कठिनता ई अछि जे हुनक गीत-सभक भनितामे महिलाक एकमात्र नाम आएल अछि **बासली** वा **बाशुली** (जे चामुण्डा नामसँ प्रसिद्ध एक कृशकाय बुभुक्षिता देवीक नामान्तर थिक)। एहि सम्प्रदायक परम्परागत कथा-सभमे वाशुली नहि, ओकरा स्थानमे एक महिला उल्लिखित अछि, जे सम्भोगात्मक तान्त्रिक कर्ममे पुरुषक सहचारिणीक काज कए सकैत छलि। ओ धोबिनि छलि, परन्तु ओकर नामक विषयमे ऐकमत्य नहि अछि। कथा रोचक अछि आ' ओकर सम्बन्ध ओहि गीत-सभसँ निकटतः जोड़ल अछि जे चण्डीदासक नामपर संचित भेल अछि। ई कथा आगाँ कहल जाएत।

पारम्परीण वैष्णव-लोकनि चण्डीदासहुकेँ ताही रूपेँ पूज्य मानैत छथि जाहि रूपेँ विद्यापति ओ जयदेवकेँ, कारण जे ओहो उत्तम भजन लिखने

छथि ओ चैतन्य हुनको रचनाक श्रद्धा-सहित रसास्वादन करैत छलाह। एहिमे कोनो सन्देह नहि जे नैष्ठिको वैष्णव-लोकनि चण्डीदासक कतोक गीत एकान्तमे तथा कीर्तन-मण्डलीमे गबैत छलाह, किन्तु तैओ ई बात विचित्र लगैत अछि जे चण्डीदासक भनितावाला कोनो गीत कोनहुँ वैष्णव-पद-संग्रहमे नहि पाओल जाइत अछि, आ' ने ई गीत-सभ सतरहम शतकक मध्यसँ पूर्वक कोनहु ग्रन्थमे उद्धृते अछि। परन्तु जयदेव ओ विद्यापतिक गीत उपेक्षित नहि छल। तँ की एकर ई अर्थ भए सकैत अछि जे विद्यापतिक अपेक्षया चण्डीदास सोड़हम शतकक अधिक निकट छलाह? जे गीतसभ असंख्य सहजिआ पोथी-सभमे भेटैत अछि ओ जे प्राचीन कीर्तन-संग्रहसभमे गृहीत अछि से चण्डीदास-सन सत्कविक कृति नहि प्रतीत होइत अछि, कारण जे ओहिमे कतोक तँ केवल साम्प्रदायिक रहस्योक्तिसँ भरल ओ काव्यात्मक तत्वसँ रहित अछि, आ' शेष गीत उत्तरकालीन अंटसंट लिखक्कड़क रचना प्रतीत होइत अछि। मुदा तैओ ई खूब सम्भव जे अनेक शताब्दीक परम्परा-प्रवाहमे चण्डीदासक प्रचलित गीतमे हुनक नामक वा भनिताक बदला ओहि कालक अधिक प्रचलित आन कविक नाम जोड़ाए गेल हो। प्रतीत होइछ जेना सतरहम शताब्दीक अन्त होइत-होइत ई प्रक्रिया उनटि गेल आ' वास्तविक रचयिताक नामक बदला चण्डीदासक नाम जोड़ि देबाक चेष्टा चलल। बंगाल ओ मिथिलामे जहिआ गीत लिखब जोरसँ आरम्भ भेल छल तहिआ कविलोकनि एक वा दू कड़ीक छोट-छोट गीत बिनु भनिताक सेहो लिखैत छल होएताह। खूब सम्भव जे तदनुसार चण्डीदास सेहो किछु लघु गीत लिखने होथि ओ प्राचीन वैष्णव ग्रन्थ-सभमे उद्धृत एहन लघु गीत-सभ हिनके रचना हो, जे भजन-संग्रह-सभमे तथा वैष्णव ओ अवैष्णव गाथा-काव्यसभमे दोहा-गीत बहल गेल अछि।

प्राचीन बंगला साहित्य उनैसम शतकक आरम्भहिसँ छपब आरम्भ भेल ओ वैष्णव पुस्तक तथा पुस्तिका-सभ सेहो ओकर उत्तरार्द्धक मध्य भागसँ छपए लागल। छोट-छोट कीर्तन सभ, जाहिमे विद्यापति, चण्डीदास, गोविन्द-दास आदिक कतोक गीत सेहो रहैत छल, सरतौआ प्रेससभमे देशक साक्षर वैष्णव पुरुष ओ महिलालोकनिक उपयोगार्थ छपैत छल। साहित्यिक रुचिवाला वैष्णवेतर व्यक्ति तथा अंगरेजी शिक्षा प्राप्त जन-साधारण केवल चारि नाम जनैत छलाह—कृत्तिवास, काशीराम, कविकङ्कण ओ

भरतचन्द्र। ईश्वरचन्द्र गुप्त (१८१२-५९), जे भरतचन्द्र तथा हुनक परम्पराक अन्यान्य गीतकार-लोकनिक प्रशंसक छलाह, सेहो वैष्णव पदावलीक अनुरागी प्रायः नहि छलाह।

बंगला साहित्यक सर्वप्रथम ऐतिहासिक विवरण जे लघु ओ अपर्याप्त होइतहुँ ओहि समयमे शिक्षित बंगाली-लोकनिकेँ ज्ञात छलनि, से छल हिन्दू कालेजक छात्र ओ अंग्रेजी पद्यक अन्यतम भारतीय लेखक काशी प्रसाद घोषक एक निबन्ध, जे लिटरेरी गजट(१८३०)मे प्रकाशित भेल रहए। ओहिमे ने वैष्णव पदक चर्चा अछि आ' ने वैष्णव कविक। लगभग दुइ दशकक बाद, ईश्वरचन्द्र गुप्त अपनासँ सए वर्ष धरि पूर्वक कवि ओ लोकप्रिय गीतकार-लोकनिक जीवन ओ कृतिक उद्धार करबामे प्रवृत्त भेलाह तथा एहि क्रममे ओ हुगली-तटवर्ती नगर-क्षेत्रक कतोक सुप्रसिद्ध(जेना भरतचन्द्र ओ राम प्रसाद) आ' कतोक अल्प प्रसिद्ध (जेना रामजी दास ओ हरि ठाकुर) कवि-लोकनिकेँ प्रकाशमे अनलन्हि। गुप्त संगीत-रसिक छलाह आ' अर्द्ध-ग्राम्य गीत सेहो जनैत छलाह। हुनका कीर्तन-गीतसँ सेहो परिचय छलन्हि। हुनका समय धरि वैष्णव वा अवैष्णव सकल समृद्ध परिवारमे श्राद्धकर्मक अवसरपर कीर्तन करबाक परिपाटी लुप्त नहि भेल छल। एहि सभ बातक ज्ञान हुनका बढ़िआँ-जेकाँ छलन्हि, कारण जे ओ स्वयं वैष्णव कुलमे उत्पन्न भेल छलाह। ओ ओहि रहस्य-गीत सभक परिपाटीसँ सेहो पूर्णतः परिचित छलाह जे हुनका समयमे बाउल-सहजिआ तथा कर्ताभजा (व्युत्पत्त्यर्थ 'प्रधान उपासक') गबैत रहथि। ई कर्ताभजा एक रहस्यवादी सम्प्रदाय छल जे प्रेममार्गी वैष्णव सम्प्रदायमे सूफी, क्रिस्तानी आदि अन्यान्य पन्थ ओ धर्मक तत्त्वसभकेँ मिलए बनल छल ओ अठारहम शतकक अन्तिम दशकसँ तीस चालीस वर्ष धरि कलकत्ताक समृद्ध परिवारसभमे, परदाक तरहि-तर, प्रचलित छल। गुप्त एहि बाउल आ कर्ताभजा पद सभक उत्कृष्ट उपहास (पैरोडी) लिखने छथि, किन्तु ओहो वैष्णव कवि आ' हुनक कृतिक विषयमे पूर्णतः मूक छथि।

बंगलाक कतोक कवि (विद्यापति ओ चण्डीदास समेत) केँ तथा कतोक वैष्णव कृतिकेँ साधारण पाठकक समक्ष अनबाक यशक भागी भेलाह राजा राजेन्द्रलाल मित्र (१८२२-९१), जे ओहि शतकक एक उत्कृष्टतम प्राच्य-विद्या-विशारद भारतीय छलाह। ओ स्वसम्पादित आ' सरकारद्वारा सम्पोषित "पेनी मैगजिन' **विविधार्थ-संग्रहमे** (१८५८ ई०मे) एक छोट-सन

निवन्ध प्रकाशित कएलन्हि, जकर शीर्षक छल 'बंगभाषार उत्पत्ति'। एहि निबन्धसँ आओर कोनो तेहन फल तँ नहि भेल, केवल देशीय साहित्यक प्रेमीलोकनिकेँ बहुत रास अज्ञात रचना ओ रचनाकार-संभक अस्तित्वक सूचना भेटलन्हि। मित्र एक समृद्ध वैष्णव परिवारक सन्तान छलाह आ' हुनक पिता एवं पितामह स्वयं कीर्तन-गीत रचैत छलथिन्ह। एहि निबन्धमे उल्लिखित काव्य ओ कविक चर्चा ओ बाल्यावस्थहिमे सुनने छलाह। ई मानव युक्तिसंगत होएत जे आधुनिक बंगला काव्यक जन्मदाता माइकेल मधुसूदन दत्तकाँ वैष्णव पदावलीक रसास्वादन करओनिहार मुख्यतः इएह मित्र छल होएताह जे हुनक अन्यतम सुहृद ओ सत्समीक्षक छलाह।

वैष्णव पदावली ओ तकर रचयिता-लोकनिकेँ सामान्य बंगाली पाठक-लोकनिक समक्ष अनबाक दिशामे ठोस काज आरम्भ कएनिहार प्रथम व्यक्ति छलाह एक उच्च विद्यालयक शिक्षक (पाछाँ प्रधानाध्यापक) जगबन्धु भद्र, जे दू नाटक लिखने छलाह आ' मधुसूदन दत्तक महाकाव्यक विड़म्बना(पैरोडी) लिखि समकालीन साहित्य-जगत्मे ख्याति पओने छलाह।

भद्र प्राचीन कीर्तन-संग्रह पोथी-सभसँ बटोरि-बटोरि 'महाजन-पदावली-संग्रह' तथा 'व्रजगाथा' नामसँ कतिपय वैष्णव पद प्रकाशित कएलन्हि (१८७४-१८७५)।

भद्रक ई दूनू पोथी, जे देहाती प्रेसमे सस्तौआ आवरण-सज्जाक संग छपल छल, ने सामान्य पाठक-वर्गमे कोनो लहरि आनि सकल आ' ने वैष्णव पाठके-लोकनिकेँ आकृष्ट कए सकल, कारण जे लगभग समकालहिमे शारदा चरण मित्र ओ अक्षयचन्द्र सरकार 'प्राचीन-काव्य-संग्रह' नामसँ वैष्णव काव्यक शृंखलाबद्ध संग्रह टीका-समेत ओहिमँ नीक रूप-रंगमे प्रकाशित कए देलन्हि। एहि शृंखलामे पाँच गोट संग्रह प्रकाशित भेल जाहिमे तीन संग्रह एकैकशः तीन विशिष्ट कवि विद्यापति, चण्डीदास ओ गोविन्ददासक गीतक छल। पहिने विद्यापति बाला खंड बहराएल (१८७४)। मित्र ओ सरकारक ई पदावलीसभ शिक्षित समाजकेँ वास्तवमे वैष्णव साहित्यक दर्शन करओलक। कारण जे तहिआसँ बंकिमचन्द्र चटर्जी समेत तत्कालीन मूर्द्धन्य साहित्यकारो-लोकनि चण्डीदास ओ विद्यापतिक पंक्तिकेँ उद्धृत करैत दृष्टि-गोचर होइत छथि। परन्तु आधुनिक साहित्य-जगत्केँ वैष्णव काव्यक वास्तविक महत्व सुझएबाक श्री रवीन्द्रनाथ ठाकुरकेँ छन्हि जे अपन किशोर

अवस्थहिमे जयदेव तथा अन्यान्य वैष्णव कविलोकनिक रचनाक रसास्वादन कएने छलाह ।

बंगीय साहित्य - परिषदक स्थापनासँ बहुत दिन पूर्वहि, जार्ज अब्राहम ग्रियर्सन कतोक भारतीय आर्यभाषा-सभक प्राचीन देशी साहित्यक शास्त्रीय ओ समीक्षात्मक अध्ययन आरम्भ कएने छलाह। ओ व्रजभाषाक एवं मैथिलीक वैष्णव काव्यक रसिक छलाह, तथा विद्यापतिकेँ हुनक अपन देस-कोसमे, जतए लोक हुनका एकदम बिसरि गेल छल, पुनःप्रतिष्ठापित करबाक प्रबल प्रयास कएने छलाह। कलकत्तामे १८९४ ई० मे बंगीय - साहित्य-परिषदक स्थापनाभेला पर, बंगलाक ओहि ज्ञाताज्ञात पुरातन रचना-सभक संग्रह जोरसँ होअए लागल, जे चिर कालसँ अरक्षित-उपेक्षित हस्तलेख-सभमे टिकल छल। बंगालक कोन-कोनसँ बटोरल गेल हस्तलेख-सभमे चण्डीदासक बहुत रास अज्ञात गीत भेटल आ' से परिषद-पत्रिकामे प्रकाशित भेल। एहिसँ जन-सामान्यमे एहि दिस विशेष रुचि उदित भेल। मुदा जे गीत-सभ ओहि शताब्दीक प्रथम दू दशकमे भेटल से, विशेषतः पूर्वोपलब्ध गीत सभक तुलनामे, ओतेक सुन्दर नहि छल। अतः सूक्ष्मदर्शी पाठक-लोकनिकेँ एहन सन धारणा बनबए पड़लन्हि जे बादमे सम्भवतः एक आओर चण्डीदास नामक कवि भेलाह जे कीर्तन तथा सहजिआ गीतक साधारण कोटिक रचयिता छलाह ।

चण्डीदास-समस्या, अर्थात् हुनक अनेकत्वक प्रश्न, सहसा तीव्र भए उठल १९१६ ई०मे, जखन राधाकृष्ण - प्रणय - लीलाविषयक गीत - सभक एक शृंखला नओ वर्ष पूर्व विष्णुपुर (बाँकुरा) मे बंगीय-साहित्य-परिषदक कुशल हस्तलेख - संग्राहक बसन्तरंजन राय द्वारा आविष्कृत एकमात्र हस्तलेखक आधार पर, प्रकाशित भेल। एहि हस्तलेखमे आरम्भक एक पूरा पात आ आधा पात नहि छल तथा अन्तसँ एक वा अनेक पात लुप्त छल, जतवा पात बाँचल छल (२—२२६, बीचमे वाइस पात ओ एक आधा पात लुप्त) ताहिमे कतहु ग्रन्थक नाम नहि छल। आविष्कर्ता राय एकरा स्वयं 'श्रीकृष्णकीर्तन' नाम दए परम अवधानपूर्वक सम्पादित करलन्हि ओ परिषदक किछु विद्वानलोकनिक दल बनाय एकर भूमिका लिखलन्हि। तुरन्त प्राचीन साहित्यक विद्वान ओ रसिक-लोकनिक कान ठाढ़ भए गेल; हुनकालोकनिक प्रतिक्रिया तीव्र ओ परस्पर भिन्न छल। पुरातात्विक

विद्वत्समाजमे गमीं आएल । मूर्द्धन्य पुरालेखविद् आर० डी० बनर्जी लिपिक अध्ययनसँ निष्कर्ष बहार कएलन्हि जे उक्त हस्तलेख सम्भवतः चौदहम शताब्दीमे, नहि तँ कमसँ कम पन्द्रहम शताब्दीक आदि भागमे नकल कएल गेल होएत । बंगलाक पुरावित्केसरी हरप्रसाद शास्त्री तँ आओर अधिक उत्साहित ओ प्रौढ़ भए उठलाह आ एतेक धरि कहि देलन्हि जे ओहि पद सभक लेखक जयदेवहुसँ प्राचीन छल होएताह । हिनक प्रपिपक्षी वर्गमे ओहन महाविद्वानलोकनि तँ नहि छलाह, किन्तु संख्यामे प्रवल अवश्य छलाह, कारण जे विशेष प्रसिद्ध वैष्णव विद्वानलोकनि ओ वैष्णव-साहित्य-रसिक सामान्य पाठकवर्ग एही वर्गमे शामिल छलाह । श्रीकृष्णकीर्तनकेँ एतेक पुरातन ओ चण्डीदासक वास्तविक कृति मानबामे हिनकालोकनिकेँ प्रथतः दू आपत्ति छलन्हि । पहिल ई जे एहिमे आदिसँ अन्त धरि जे धारा प्रवहमान अछि से घोर शृंगारिक अछि, आ एतेक घोर शृंगारिक गीतक चैतन्य प्रशंसा करथि से विश्वास नहि कएल जाए सकैत अछि । दोसर बात ई जे एंकर भाषा तेहन अपरिचित आ असाधु अछि जे चण्डीदासक ज्ञात गीतसभसँ एहि 'श्रीकृष्णकीर्तन'क गीतसभक शब्द भंडारमे कोनो साम्य नहि भेटैत अछि ।

एहि दूनू दलमे वाद - विवाद किछु दिनधरि चलैत रहल । अन्तमे प्रतिपक्षी दलक नेता साहित्यक इतिहासलेखक डी० सी० सेन अपन इतिहास मे एहि पुस्तकक वृत्तान्त समाविष्ट कए विपक्षक बात स्वीकार कए लेलन्हि । 'श्रीकृष्णकीर्तन' कलकत्ता विश्वविद्यालय मध्य बंगला एम०ए०क नवनिर्धारित पाठ्यसूची (१९२९)मे समाविष्ट कएल गेल । एहि विजयक बादो कतोक प्रतिपक्षीलोकनिक हृदय शान्त नहि भेल । ओलोकनि अपन सन्देहकेँ दबाए नहि सकलाह ।'श्रीकृष्णकीर्तन'केँ प्राचीन मानबाक हुनकालोकनिकेँ दू आधार छलन्हि—(१) लिपिक प्राचीनता, ओ (२) भाषा एवं शब्दभंडारक प्राचीनता । पुरालेखवेत्ता ई सदा जनैत छलाह जे उक्त हस्तलेखक लिपि एक रंग नहि अछि । एहिमे स्पष्टतः एक गोट प्राचीन हस्तलिपि अछि, जाहिमे लगभग सभ पात लिखल गेल अछि, किन्तु दू गोट आओर हस्तलिपि अछि, जाहिमे पहिल बहुत बादक लिपि थिक आ' दोसर तँ ताहूसँ बादक, आ' कखनहु कखनहु ई दूनू हस्तलिपि ओही पातमे आएल अछि जाहिमे प्राचीन हस्तलिपि हो अछि । तेँ ई नहि कहल जाए सकैत अछि जे उत्तरकालीन हस्तलिपि

वाला पात सभ वादमे जोड़ल वा बदलल थिक। परन्तु हुनकालोकनिक आवेश एतेक दृढ़ छलनि जे सन्देहक जड़िएमे नष्ट कए देलन्हि। दोसरो आधार मानबामे दोष छल। 'श्रीकृष्णकीर्तन'क व्याकरणात्मक स्वरूप तँ निश्चित रूपसँ पुरान अछि, किन्तु एहिमे यत्र-तत्र एहनो रूपसभ भेटैत अछि जकर अस्तित्व सतरहम शताब्दीक आरम्भहुमे कदाचित सम्भव। अतः भाषा-सम्बन्धी आपत्तिओ ओहने-सन अछि जेहन लिपिसम्बन्धी। परन्तु एहन विद्वान अपेक्षाकृत थोड़ छलाह जे एहि भाषा-वैषम्यकेँ लक्षित कए सकथि। फलतः थोड़बे दिनमे विवाद शान्त-जेकाँ भए गेल। परन्तु समस्या तदवस्थे रहि गेल। एहि प्रसंग विचार पुनः आगाँ कएल जाएत।

'श्रीकृष्णकीर्तन'क प्रकाशनक बादसँ चण्डीदास - रचित ढेर रास गीत प्रकाशमे आएल अछि। ओ सभ बहुत परवर्ती हस्तलेखसभमे भेटल अछि। आ हमरालोकनिक विवेच्य कोटिमे नहि अबैत अछि।

2. जीवन ओ तिथि : अन्वेषण ओ अनुसन्धान

चण्डीदासक कतोक गीत चैतन्यकेँ ज्ञात छलन्हि, ताहिसँ ई मानल जाए सकैत अछि जे चण्डीदासक काल सोलहम शताब्दीक आदितः तीन दशकसँ पश्चात् नहि भए सकैत अछि। ई मानैत जे चैतन्यक प्रिय गीतक रचयिता एक अन्य कवि रामानन्द रायेँ-जेकाँ इहो चैतन्य प्रभुक समकालीन छलाह, हिनक अधःसीमा सम्भवतः १५२५ क लगभग होइत अछि, आ ऊर्ध्वसीमा पन्द्रहम शताब्दीक मध्य सम्प्रति सामान्यतः मान्य अछि। एकर प्रमाण कहल जाइत अछि 'श्रीकृष्णकीर्तन'क प्राचीनता। परन्तु कहिए चुकल छी जे एहि प्राचीनताक दावी एखनहु धरि साबित नहि भेल अछि। एक समयमे एकटा प्रमाण प्रस्तुत कएल गेल छल जे अकाट्य-सन लगैत छल। ई छल एकटा चतुष्पदी, जे गणित आर्यामे रचित अछि ओ कोनो अत्यन्त अप्रसिद्ध पत्रिकामे प्रकाशित भेल रहए; स्रोतक उल्लेख नहि अछि :—

विधुर निकटे बसि नेत्र पञ्चबाण।
नवहु नवहु रस गीति परिमाण॥
परिचय सङ्केते अङ्के निज्जा।
चण्डीदास रस-कौतुक किज्जा॥
(आदि विधेय रस चण्डीदास किज्जा)॥

एकर निम्नलिखित अनुवादमे, जे शब्दशः ओ अनन्वित जेकाँ कएल गेल अछि, सम्बद्ध शब्द सभक संख्यात्मक अर्थ कोष्ठमे देल गेल अछि :—

> 'चन्द्रमा (१) क निकटमे बैसल अछि नेत्र (३)क पञ्च (५) बाण (५); नब (९) सँ नब (९) रस पर्यन्त गीत सभ नापल अछि। एकर व्याख्या अंकात्मक संकेतमे कएल जाए। चण्डीदास ई रोचक पिहानी बनओलन्हि। [पाठान्तरक अनुसार, चण्डीदास (एहि प्रकारेँ) आदिम ओ समुचित रसक वर्णन कएलन्हि]।

एहि वाक्य सभक ई अर्थ लगाओल गेल जे एहि चतुष्पदीसँ युक्त ग्रन्थक रचना

शाके १३५५ (=१४३३-३४ ई०)मे सम्पन्न भेल। एहि निष्कर्षकेँ स्वीकार करबामे मुख्य आपत्ति ई अछि जे ई अनेक पूर्वावधारणा पर निर्भर अछि, यथा :—(i) उक्त चतुष्पदी प्रामाणिक थिक, (ii) ई चण्डीदासक कोनो ग्रन्थ वा गीत-संग्रहमे समाविष्ट छल जे सम्प्रति लुप्त भए गेल अछि, (iii) प्रथम द्विपदी गणितीय सूत्र (अरजा) थिक, (iv) नवहु नवहु ओहि सूत्रक अंग थिक, तथा (v) एहिमे तत्काल अज्ञात कोनो ग्रन्थ वा ओकर हस्तलेख सम्पन्न होएबाक तिथि देल गेल अछि। एहि निष्कर्षक विरुद्ध एक छोट-सन किन्तु संगत युक्ति इहो अछि जे एकर प्रथम द्विपदीक अर्थ परम अस्पष्ट अछि।

चण्डीदासक कालकेँ ऊपर लए जएबामे पारिपार्श्विक साक्ष्यो विशेष सहायक नहि अछि। सोलहम शताब्दीक आरम्भमे बंगाल मध्य विद्यापति कवि रूपमे हिनकासँ अधिक ख्यात छलाह। वास्तवमे चण्डीदासक नाम चैतन्यक गार्हस्थ्य त्यागक बादहिसँ सुनि पड़ैत अछि। अद्वैताचार्य, जे चैतन्यक परम भक्त शिष्ये टा नहि, अपितु पितृकल्प छलाह, विद्यापतिक गीतक बड़ प्रेमी रहथि। जखन सद्यः संन्यास लेने चैतन्य हुनका लग पहुँचलाह तखन ओ विद्यापतिक एक गोट गीत गाबि रहल छलाह। वृन्दावनदास, जे बंगलामे चैतन्यक चरित सभसँ पहिने लिखलन्हि, ओहि कालक सबसँ प्रख्यात कविक रूपमे विद्यापति, जयदेव ओ कालिदासक उल्लेख करैत छथि। यदि मानदण्डमे ख्यातिकेँ कोनो स्थान हो तँ विद्यापति चण्डीदाससँ वरिष्ठ ओ श्रेष्ठ छलाह। निर्विवाद रूपेँ ज्ञात अछि जे मिथिलाक विद्यापति १४६० ई० धरि जीवित छलाह।

सोलहम शताब्दीक आदिमे चण्डीदासक जे ख्याति विदित अछि से उत्तर राढ़ ओ तत्संलग्न गंगापारक क्षेत्रे धरि सीमित बूझि पड़ैत अछि। बंगालक सुल्तान सभक राजधानी—नगर गौड़क निकटवर्ती हिन्दू उपनगर रामकेलिक कातमे एक टा गाम छल जे तत्काल-प्रचलित कृष्ण-कथाकेँ संगीत द्वारा वा कठपुतरी नाच द्वारा प्रदर्शित करबामे प्रख्यात छल। तदनुरूपे एहि गामक नाम छल 'कानाइर नाटसाल' (अर्थात् कृष्णक नाट्यशाला)। चैतन्य जखन मथुरा-वृन्दावन जएबाक पहिल बेर प्रयास कएलन्हि तँ रामकेलि धरि बढ़ल रहथि ओ ओतएसँ घुरबाक काल कानाइर नाटसाल होइत गेलाह आ' ततए कृष्णक कोनो लीला वा कठपुतरीक नाच देखलन्हि। एहि

स्थितिमे ई कल्पना करब स्वाभाविक होएत जे एतहि महाप्रभुकेँ चण्डीदासक गीत ओ/वा लीलाभिनयक रसास्वादन करबाक प्रथम बेरि अवसर भेल होएतन्हि। एहि सम्बन्धमे एतए इहो उल्लेख कएल जाए सकैत अछि जे चण्डीदासक चर्चा एक ठाम आओर आएल अछि। भागवतपुराणक 'वैष्णव तोषणी' टीकामे सनातनगोस्वामी ओ हुनक सहयोगी भातिज जीवगोस्वामी चण्डीदासक उल्लेख कएने छथि तथा हुनक 'श्रीकृष्णकीर्तन'क दुइ विशिष्ट लीलाक चर्चा कएने छथि। ई दुनू गोस्वामी अपन टीकामे कहैत छथि जे कृष्ण अन्यान्यो अनेक सरस-लीला कएने छलाह जे भागवतमे नहि वर्णित अछि। ओ कहैत छथि—"श्रीजयदेवचण्डिदासादिदर्शितदानखण्डनौका खण्डादिलीलाप्रकाराश्च ज्ञेया:" (एहिमे दानखण्ड, नौकाखण्ड आदि नानाविध अन्यान्य लीलासभ सेहो समाविष्ट अछि जे श्रीजयदेव ओ चण्डीदास आदि देखओने छथि)। महत्त्वपूर्ण अछि जे एतए गोस्वामी यथापेक्षित "वर्णित" शब्दक बदलामे "दर्शित" (दृश् धातुक प्रेरणार्थक भूतकालिक कृदन्त रूप 'देखाओल गेल') शब्दक प्रयोग कएलन्हि अछि। ध्यान देल जाए जे जयदेवक काव्य एक प्रकारक संगीत रूपक थिक ओ ठीकसँ बिचारलापर चण्डीदासक 'श्रीकृष्णकीर्तन' सेहो एही प्रकारक रचना सिद्ध होइत अछि। सनातन हुसेन शाहक मन्त्री रहथि आ' रामकेलि गामक निवासी छलाह, ओ चण्डीदासक रचनासँ नीक जेकाँ-परिचित छल होएताह। भए सकैत अछि जे चण्डीदासकेँ सुल्तानक दरबारसँ तथा ओहि दरबारक कतोक हिन्दू आ' मुसलमान अधिकारीलोकनिसँ सेहो सम्पर्क रहल होइन्ह। चण्डीदासक देहावसानसम्बन्धी एक गोट कथामे कहल गेल अछि जे सुल्तान ओ हुनक बेगमलोकनिक समक्ष अपन कला प्रदर्शित करबाक हेतु चण्डीदास बजाओल गेल छलाह। 'श्रीकृष्णकीर्तन'क हस्तलेखमे कतोक मुसलमान लोकनिक नाम भनितामे आएल अछि तथा एक-दू पंक्ति फारसीमे लिखल अछि (जे नहि पढ़ाएल अछि); एहिसँ प्रतीत होइत अछि जे कोनो समयमे ई हस्तलेख कोनो ने कोनो बंग-कविता-प्रेमी मुसलमानक हाथमे ओ अधिकारमे रहल होएत।

परवर्ती कालमे चण्डीदासक सम्बन्धमे बहुत रास कथा गढ़ल गेल अछि। ई कथा एवं कथांश दू कोटिमे बाँटल जा सकैत अछि :—(i) हुनक परम्परा-विरोधी भक्तिमार्ग ओ निम्न जातिक रजकिनी संग प्रेमभाव, तथा (ii) हुनक

सामान्य जीवन ओ गति-विधिक विवरण। प्रथम कोटिक कोनहु कथांशक चर्चा सतरहम शताब्दीक अन्तसँ पहिने नहि पाओल जाइत अछि। द्वितीय कोटिक कथा तँ अठारहम शताब्दीक बादे देखि पड़ैत अछि।

रहस्यवादी वैष्णव धर्मक अनुयायीलोकनि मानैत छलाह जे चण्डीदास रहस्यवादी वैष्णव छलाह, ओ एक अस्वजातीय परकीया प्रेमिकाक सहायतासँ 'योग' करैत छलाह। सम्भव थिक जे एहिमे किछु सत्यता हो, वा किछुओ सत्यता नहि हो, परन्तु से जनबाक कोनो उपाय कहाँ अछि। हिनक नाम, यदि से वास्तवमे हिनक कवि-नाम नहि, अपितु वैयक्तिक नाम हो, सूचित करैत अछि जे ई शाक्त कुलक छलाह। यदि कवि ई नामकरण स्वयं कएने होथि (जेना ओडियाक 'सरलादास' कएने छलाह) तँ एहिसँ हुनक तान्त्रिक पूजासँ कल्पित सम्बन्ध संगत मानल जाएत। 'श्रीकृष्णकीर्तन'मे आन गीतक भनितामे ओ सदा अपन आराध्य देवी वासली (=बासोली)क उल्लेख करैत छथि। कतोक छिट-फुट गीतहुमे 'वाशुली'क उल्लेख अछि। भयाउनि देवी चामुण्डाक उल्लेख बाशुली वा वासली रूपमे वृन्दावनदासक 'चैतन्यभागवत'सँ आरम्भ कए सोलहम शताब्दीक प्राय: सकल ग्रन्थमे भेटैत अछि। चण्डीदासक विषयमे प्रचलित कतोक कथा-सभमे, जकर चर्चा आगाँ आओत, बाशुली मनुष्यवत् व्यवहार करैत छथि आ' महादेवी नित्याक दूती भए कविक निकट अबैत छथि। एहि सम्बन्धमे हम कहब जे 'नित्या' शब्द कविक प्रेमिकाक जातिक सम्बन्ध खोलैत अछि। 'नित्या शब्द प्राचीन बंगलाक नेत ("पातर वस्त्र") ओ नवीन बंगलाक नेता("न्यूर, पोछना")शब्दक प्रतिरूप थिक। नित्या देवी तदनुसार उचिते देवी-देवतालोकनिक वस्त्र धोइनिहारि कहलि गेलि छथि। एहि प्रकार चण्डीदासक प्रेमिका (प्रेमिका) धोबिनि छलीह।

'श्रीकृष्णकीर्तन'मे चण्डीदास आनाकेँ नियमत: "बडु" चण्डीदास कहैत छथि। बँगलामे सामान्यत: 'बडु' शब्दक अर्थ होइत अछि मन्दिरक सेवक, जे प्राय: अब्राह्मण होइत छल। 'श्रीकृष्णकीर्तन'क आविर्भावसँ पूर्व ओ पश्चात् ज्ञात कतोक गीतसभमे कवि अपनाकेँ 'द्विज' कहैत छथि। कतोक अन्य गीत-सभमे कवि अपनाकेँ 'वटु' कहने छथि। द्विज बडुसँ भिन्न थिक, किन्तु बटु नहि। बटु तखनहि अद्विजवाचक भए कहैत अछि जखन एकरा बडु शब्दक संस्कृतीकरण मानी। कोनहु तरहेँ, कतोक विद्वान

जे 'द्विज' चण्डीदास ओ 'वडु' चण्डीदासकेँ एक कहने छथि से मानव कठिन, खास कए तखन जखन देखैत छी जे सोलहम शताब्दीक अन्तिम चरणमे 'द्विज' चण्डीदास नामक एक भिन्न कवि भेल रहथि जे नरोत्तम दासक शिष्य छलाह।

चण्डीदासक गृहस्थ जीवन सम्बन्धी कथा-सभक प्राचीन पाठमे कहल गेल अछि जे हुनक प्रेमिका एक धोबिनि छलि, जकर नाम 'तारा' रहैक ('तारा' सँ हो वाशुलीक नामान्तर थिक, किन्तु ओ चामुण्डाक ललित पक्षक सूचक थिक)। कतोक परवर्ती पाठमे 'रामा' वा 'रामी' नाम अछि। आओर परवर्ती पाठमे पूर्वक दूनू पाठक समन्वय कए ओकर नाम 'राम तारा' कए देल गेल अछि; अठारहम शताब्दीसँ पहिने बंगाली महिलाक एहन नाम बहुत सम्भव लगैत अछि।

हालमे. खास कए वर्तमान शतकक तेसर ओ चारिम दशकमे, जखन चण्डीदासविषयक विवाद चलिए रहल छल, विशेषज्ञ-लोकनि मध्य एहि बात पर तीव्र मतभेद छल जे कवि कोन स्थान वा प्रदेशकेँ सुशोभित कएने छलाह। सामान्यतः ई मानल जाइत छल जे कवि पूर्वज-लोकनि नानुर (वा नान्नुर) नामक गाममे रहैत छलाह, जे बोलपुर (शान्ति-निकेतन) सँ कतोक मील पूब अछि।

एहि गामक नामोल्लेख सभसँ पहिने पाओल जाइत अछि 'विवर्त-विलास' मे, जे बाउल-सहजिआसभक एक मान्य ग्रन्थ थिक ओ अठारहम शतकक उत्तरार्द्धमे कोनो समय लिखल गेल। किन्तु ओहिमे ई नाम एक ठाम 'नानुर' लिखल अछि आ दोसर ठाम 'नान्द', जाहिसँ ध्वनित होइत अछि जे एकर वास्तविक नाम 'नान्दुर' छल होएत।

वास्तवमे स्थानीय लोक एहि गामकेँ 'नादुड़' कहैत अछि। यदि अन्तिम व्यंजनसँ उत्पन्न कठिनताकेँ उपेखि दी तँ ओकरा 'नान्दुर' क उत्तरकालीन रूप मानि सकैत छी। परन्तु नवम शताब्दीक आदि भागक कतोक दस्तावेजमे तथा उत्तर बंगालक निवासी जगन्नाथदासक (नवम शताब्दीक आदिभाग) क 'भक्त-सरितामृत' मे एकर नाम 'नानौर' आएल अछि। हुनक उद्धरण लेल जाए—

पूर्व देशे आछे एक ननोर नामे ग्राम

'पूर्व देशमे नानोर नामक एक गाम अछि'

'नानोर' नाम रेनेलक बंगलाक नक्शा (१७७९)मे सेहो आएल अछि ।

आधुनिक कालमे चण्डीदास स्वीय जीवन-वृत्तान्त सभसँ पहिने नामगति न्यायरत्न अपन बंगला साहित्यक इतिहास 'बंगभाषा ओ साहित्य विषयक प्रस्ताव', १८७३ क प्रथम भागमे देलन्हि । एहिमे ई कहने छथि जे चण्डीदास ब्राह्मण छलाह ओ हुनक निवास ग्राम छल नन्नुर, जे वीरभूम जिलाक पूर्वीय भागमे अवस्थित साकुलिपुर थानामे पड़ैत अछि ।

संक्षिप्त वा विस्तृत, सभ अनुश्रुतिमे चण्डीदास ग्रामदेवता वाशुलीसँ जोड़ल गेलाह अछि । न्यायरत्न कहैत छथि जे ओहि गाममे एहि देवीक एक प्रस्तरमूर्ति आइओ पूजल जाइत अछि, आ' ई प्रसिद्ध अछि जे चण्डीदास एहि देवीक उपासक छलाह । परन्तु जखन न्यायरत्नक एहि बातक जाँच कतोक विद्वान कएलन्हि तँ कठिनता उपस्थित भए गेल । ई स्पष्ट भए गेल जे उक्त प्रस्तरमूर्ति उग्र देवी वाशुलीक नहि अपितु एक सौम्य देवीक थिक जे एक हाथमे पुस्तक धारण कएने छथि । तथापि नानुरक पक्षधरलोकनि हारि माननिहार नहि । ओलोकनि जेना-तेना बासली शब्दक व्युत्पत्ति वागीश्वरी (सरस्वती) शब्दसँ करए लगलाह ।

सोलहम ओ सतरहम शताब्दीमे पश्चिम बंगालक राढ़ क्षेत्रमे लगभग प्रत्येक उल्लेखनीय गाममे एक-एक देवी ओ एक देव होइत छलाह जे ओहि गामक अधिपति मानल जाइत छलाह ।

कोनो-कोनो देवता ईंटाक मन्दिरमे स्थापित रहथि, कोनो तृणनिर्मित घरमे आ' कोनो पुरान पुण्यवृक्षक तरमे । एहिमे पुरुष देवता धर्म वा धर्मराज रहथि ओ स्त्री देवता वाशुली । अग्रिम शताब्दक सभमे धर्म वा धर्मराज मन्द गतिएँ किन्तु निश्चत रूपेँ बहुतो गाममे शिवमे परिवर्तित भए गेलाह । वाशुली तँ यथावत् रहलीह, किन्तु हुनक नाम प्रायः सभठाम 'विशालाक्षी' भए गेल, किछुए स्थानमे पुरना नाम विद्यमान रहल । एहने एक गाम थिक चातना, जे विष्णुपुर (बाँकुरा)सँ एक दू मील पर अछि । चण्डीदासक जन्म ओ निवासक भूमि होएबाक गौरव नानूरक बदला - चातनाकेँ देबाक दाबी १९२७ ई० में बेस जोरसँ चलल । 'चण्डीदास-विशेषज्ञ'

लोकनि वीरभूम ओ वाँकुराक उपरोँझ मे किंकर्तव्यविमूढ़ भए गेलाह। नानूरमे चण्डीदास तँ छलाह मुदा वाशुली नहि छलीह, आ' एहिना चातना मे वाशुली तँ भेटैत छथि, किन्तु चण्डीदास (एखन धरि) नहि भेटैत छथि। जेँ चातनाक दिससँ लड़निहार नहि छलाह तेँ अपना पक्षमे शास्त्रीय ओ अन्यान्य तर्क रहितहुँ चातनावादी नानूरवादीसँ जीति नहि सकलाह। ततःपर ओलोकनि अपन कठिनता दूर करवाक हेतु एक सन्दिग्ध-मूलक अभिलेख लए उपस्थित भेलाह। ई छल कृष्णप्रसाद सेन नामक कोनो व्यक्तिक लिखल 'चण्डीदास-चरित' नामक एक वेस पैघ पद्यबद्ध पुस्तकक 'प्राप्त' हस्तलेख। एकर सम्पादन कएलन्हि बंगाली विद्वत्समाजक आ' चातनावादी दलक भीष्मपितामह योगेशचन्द्र राय, तथा एकरा प्रकाशित कएलन्हि (१९३४ ई०मे) एक प्रख्यात पत्रकार ओ विद्वान रामानन्द चटर्जी (वाँकुरा निवासी), जे परम कट्टर राष्ट्रवादी रहथि। 'चण्डीदास-चरित'क लक्ष्य छल जे चण्डीदासक जीवनविषयक तथ्य अन्तिम रूपसँ निश्चित भए जाए तथा कविक व्यक्तिगत चरितक विषयमे सम्भाव्य समस्त विवाद बन्द भए जाए। नानूरवादीलोकनिकेँ शान्त-सन्तुष्ट करबाक उद्देश्यसँ एहिमे नानूरक खण्डन नहि कए ओकरा हुनक अपर निवासस्थान मानल गेल अछि। एहिना विभिन्न कथा-सभमे जे परस्पर विरोध छल तकरहु सभकेँ समन्वित कए एकर कथा-प्रबन्धमे वैसाए देल गेल अछि। ई ग्रन्थ मानू एक बन्दूक छल जकर निशान एहि तरहेँ साधल छल जे लक्ष्यसँ किन्नहु चूकए नहि। उदाहरणार्थ, चण्डीदासक जन्म-तिथि से तारीख कहल गेल अछि जहिआ फीरोज शाह तुगलक अपन पित्तीकेँ मरवाए गद्दीपर वैसलाह।

यथावश्यक पूर्ण सतर्कता रहितहुँ एहि बन्दूकक निशान चूकि गेल वा ई कहू जे एकर गोली विस्फोट कए गेल। एक प्रतिष्ठित इतिहासविद् नलिनीकान्त भट्टसालि स्पष्ट ओ विश्वसनीय रूपेँ प्रतिपादित कएलन्हि जे 'चण्डीदास-चरित'क उक्त हस्तलेख प्रत्यक्ष जालसाजी थिक, आ' बहुत हालमे गढ़ल गेल अछि।

सोलहम ओ ताहिसँ पूर्वक शताब्दीमे उत्तर राढ़ तान्त्रिक पूजाक किछु उल्लेखनीय पीठक कारणेँ प्रख्यात छल, जतए मुख्य देवता चामुण्डा वा वाशुली छलीह। एहने एक तीर्थ छल केतुग्राम, जे वर्धमान जिलाक

117159
10.12.04

कटवासँ किछु मील उत्तर पड़ैत अछि। एतए सोलहम शताब्दीक आदिभाग मे चण्डीदास नामक एक ब्राह्मण पण्डित-कवि भेल छलाह। हिनक नओम पीढ़ीक एक वंशज अठारहम शताब्दीक उत्तरार्धमे प्रख्यात वैयाकरण रहथि। हिनक नाम छल नृसिंह तर्कपंचानन, जनिका अपन पूर्वज पर गौरव छलन्हि ओ तेँ ई बाहम शताब्दीसँ पश्चिम बंगालमे प्रचलित संस्कृत व्याकरण 'संक्षिप्तसार'क धातुपाठपर स्वलिखित टीकाक प्रत्येक अध्यायक उपसंहार-श्लोकमे अपन पूर्वजक स्तुति कएने छथि। एहि नृसिंहक अनुसार हिनक पूर्वज चण्डीदास महाकवि (कवीन्द्रः, कवीनां रविः) छलाह। एक समय हम हिनका आलोच्य चण्डीदाससँ अभिन्न मानबाक हेतु उद्दत भेल रही। परन्तु 'श्रीकृष्णकीर्तन'क रचयिताकेँ एहन व्यक्ति मानब कठिन लगैत अछि जे अपनाकेँ बारंबार आचार्य भट्टाचार्य शिरोमणि सेहो कहैत छथि। इहो निश्चित रूपेँ नहि कहल जाए सकैत अछि जे नृसिंहक ई पूर्वज 'भावचन्द्रिका' नामक काव्यक लेखक छलाह, जाहिमे कृष्णक भक्ति ओ आराधनाक विविध अंगक वर्णन कएल गेल अछि, ओ जतए ओ सम्भवतः अपनाकेँ चैतन्यक भक्त कहैत छथि: "श्रीभगवच्चरणमधुव्रतश्रीचण्डीदास।"

यद्यपि एहि बातमे अणुमात्रो प्रमाण नहि अछि जे चण्डीदास एक असवर्णा परकीया महिलाक प्रणयी छलाह, तथापि एहि बातक सर्वथा खंडन नहि कएल जाए सकैत अछि, कारण जे एहि पक्षमे बड़ प्रबल जनश्रुति अछि। परन्तु तैओ हमरालोकनि एकरा 'सम्भाव्य'सँ अधिक नहि कहि सकैत छी। तथापि एहि विषयमे बाशुलीक भूमिका विचारणीय अछि।

चण्डीदासक एक गीत, जे अनेक सहजिआ ग्रन्थमे पाओल जाइत अछि, निम्नलिखित द्विपदीसँ आरम्भ होइत अछि :—

नित्यार आदेशे बाशुली चलिल
सहज जानाबार तरे।
भ्रमिते-भ्रमिते नादुर (वा नान्द) ग्रामे तें
प्रवेश याइया करे॥

"नित्याक आदेश पाबि बाशुली सहज मार्गक उपदेश करए चललीह। घुमैत-घुमैत ओ नादुर (नान्द) गाम जाए प्रवेश कएलन्हि।"

एहि गीतकेँ उद्धृत करैत 'विवर्तविलास'क रचयिता जे कहने छथि तकरा हम अनुवाद रूपेँ एतए उद्धृत करैत छी :—

"(ऊपर उद्धृत गीतमे) वाण-साधन वर्णित अछि; जे एक महाजन प्रतिपादित कएने छथि; नित्याक आदेशेँ भगवती योगमाया प्रकट भए चण्डीदासकेँ उपदेश देलथिन्ह ।"

वाशुली कविक समक्ष अइलीह आ' हुनका सहज योगक उपदेश देलथिन्ह ई कथा अठारहम शताब्दीमे आनो ठाम तथा एहिसँ पूर्वहुँ ज्ञात छल । नरहरि चक्रवर्ती जे प्रचुर मात्रामे वैष्णव साहित्य लिखने छथि ओ नाना क्षेत्रमे सक्रिय छलाह, चण्डीदासक प्रशंसापरक अपन एक गीतमे एहि बातक उल्लेख कएने छथि ।

'भक्तचरितामृत'मे जगन्नाथदास जे कथा देने छथि तदनुसार चण्डीदास केँ पढ़बामे मन नहि लगन्हि तेँ ओ घरसँ भगाए देल गेलाह आ' अन्तमे आत्महत्या करबापर उद्यत भए गेलाह; ताहि समयमे भगवती वाशुली प्रत्यक्ष भए हुनका आत्महत्या करबासँ रोकलथिन्ह । भगवती कहलथिन्ह जे 'तोँ एक प्रसिद्ध कवि होएबह, चिन्ता नहि करह, शान्तचित्त भए घर जाह ।' चण्डीदास तहिना कएलन्हि । गाममे प्रवेश करितहिँ ओ देखलन्हि जे समीपक पोखरिमे एक रूपयौवनवती धोबिक बेटी तारा कपड़ा खीचि रहलि अछि । प्रथमे दर्शनमे दुनूमे प्रेम भए गेलन्हि ओ भगवती वाशुलीक कृपासँ शीघ्र दुनूक मिलन भेल ।

नित्या (वा नेता) भगवती वाशुलीक सखी, चिन्तक ओ मार्गदर्शिका छलथिन्ह (ई एही भूमिकामे मनसाक कथामे सेहो उपस्थित छथि) । हम पूर्वमे कहि चुकल छी जे लोक नेता शब्दक प्रसिद्ध व्युत्पत्ति (संस्कृत नेत्र, मध्यकालीन बंगला नेत 'पातर वस्त्र') क आधार पर हिनका भगवती-लोकनिक वस्त्र धोनिहारि स्वर्गीय धोबिनि मानए लागल । खूब सम्भव जे नित्या स्वयं चण्डीदासक प्रेमिका बनि गेलि हो (जे नामक अनुसार स्वयं 'चण्डीदास' छलाह ।

चण्डीदास-कथा-मालाक अन्तमे कविक परिवारमे एक भाए जोड़ल गेल । हिनक नाम एक सहजिआ ग्रन्थमे नकुल पड़ल ओ चातना-परम्परा

मे देवीदास। प्रथम नाम (नकुल) अपन जातिमे कविक प्रतिष्ठा ध्वनित करैत अछि; आ' दोसर नाम स्पष्टतः 'चण्डीदास' क प्रतिरूप थिक।

'पदकल्पतरु'मे, जे कीर्तन-गीतक सभसँ बृहत् संग्रह थिक आ अठारहम शताब्दीक अन्तभागमे संकलित कएल गेल छल, कतोक एहन गीत पाओल जाइत अछि जाहिमे वर्णित अछि जे गंगाक तटमे कोनहु ठाम एक बड़क गाछ तर चण्डीदासकेँ विद्यापतिसँ भेँट भेल छलन्हि। एहि बातक सत्यतापर विद्वानलोकनि सामान्यतः सन्देह करैत छथि। परन्तु ओ लोकनि एहि बातक खंडन नहि कए सकैत छथि जे कोनो 'चण्डीदास' सँ कोनो 'विद्यापति'क भेँट भेल होएत, कारण एहि दुनू नामक अनेक कवि बंगाल ओ मिथिलामे भेल छलाह। एहि घटनाक विस्तृत कथान्तर-सभ पाछाँ बहुत हालक हस्तलेख-सभमे पाओल गेल अछि।

---

३. कतोक रोचक कथा

"चण्डीदास" क नामक चतुर्दिक जे नाना कथा-सभ गढ़ल गेल अछि ताहिमे चारि गोट विशेष रोचक अछि। से एतए संक्षेपमे दैत छी।

पहिल ओ कथा थिक जे मुकुन्ददास अपन 'सिद्धान्तचन्द्रोदय'मे देने छथि। एहिसँ सूचित होइत अछि जे कवि गीत-रचनाक प्रतिभा कोना-कोना पओलन्हि।

चण्डीदास एक तेजस्वी पण्डित छलाह। हिनक जन्म एक सद्ब्राह्मण वंशमे भेल। हिनका तारा नामक एक कन्यासँ प्रेम भए गेलन्हि, जे वस्त्र धोए हिनक परिवारक सहायता करैत छलि। ई दुनू परम सतर्कतापूर्वक गुप्त रूपेँ मिलैत छल ओ दुनूक प्रेम केओ नहि जनैत छल। एक दिन वर्षा पड़ैत अन्हार रातिमे चण्डीदास तारासँ मिलए संकेत-स्थल गेलाह। ओतए बाट तकैत-तकैत मध्य राति समीप आबि गेल किन्तु ओ कन्या नहि आइलि। ओ एक सखीसँ हार्दिक वार्तालाप करबामे बाझि गेलि आ समयक ज्ञान नहि रहलैक। ओ आओर अधिक प्रतीक्षा नहि कए सकलाह आ' ताराक घर दिस विदा भेलाह। ओकर आँगनक एक कोनमे चुपे-चाप ठाढ़ भए प्रतीक्षा करए लगलाह जे आब अबैत अछि, तब अबैत अछि। वर्षा जोरसँ होअए लागल ओ चण्डीदास किछु इतस्ततः करए लगलाह, जाहिसँ ताराक ध्यान आकृष्ट भेल। ओ अपना सखीकेँ कहलक, जाएकेँ देखह तँ की थिक। ओ बहराइलि, किन्तु घोर अन्धकारक कारणेँ किछु नहि देखलक। तखन तारा दीप लए स्वयं बहराइलि आ' चण्डीदासकेँ एकदम भीजल आ' थरथराइत देखलक। ताराकेँ वचनसँ चुकबाक पश्चात्ताप भेलैक, आ' संगहि हुनका गंजनो कएलक जे एहन समयमे ओकरा घर अएबाक दुःसाहस किएक कएलन्हि। गंजन सुनि अपन आँगन घुरि अएलाह आ' एक गीत लिखलन्हि जकर पहिल द्विपदी ई थिक —

ए घोर रजनी मेघ - घटा बन्धु
केमने आइला बाटे।

आङ्गिनार कोने बन्धुया तितिछे
देखिया परान फाटे ।।

"एहन भयाओन राति। आकाश मेघसँ आच्छन्न अछि। हमर प्रेमी एतेक दूर बाट (घर)सँ कोना अएलाह। अङ्गनाक कोनमे हमर प्रेमी तितल छथि। से देखि हमर हृदय फाटि रहल अछि।"

एक बहुत एम्हरका सहजिआ पुस्तक 'सहज-उपासना-तत्त्व' मे ई कथा निम्नलिखित रूपमे अछि :—

चण्डीदास एक दरबारी कवि छलाह आ' हुनक भाए (सहोदर वा पितिऔत) नकुल ओहि देशक राजाक एक सेवक छलाह। चण्डीदास 'रामी' नामक एक निम्नजातिक कन्या पर आसक्त छलाह, ई बात राजाकेँ ओ अन्यान्य लोककेँ ज्ञात भए गेलैक। राजा हिनका अपन कृपा मेँ वंचित कए देलन्हि ओ समाज जातिसँ बहिष्कृत कए देलकन्हि। ई रहस्य ककरहु नहि बूझल छलैक जे वाशुलीक एक दूती ओहि रजक-कन्या रामीक हितैषी छथिन्ह। राजा तथा कविक मित्रसभ आशा करैत छलाह जे चण्डीदास रामीक मोह तोड़ि शीघ्रे घुरि अओताह। किन्तु से भवितव्य नहि छल। चण्डीदासक अभाव दरबारमे ततेक अखरए लागल जे राजा अनुनय कए हुनका घुरएबाक प्रयास करए लगलाह। वार्ता करए नकुल पठाओल गेलाह। ओहि समयमे चण्डीदास वाशुलीक मन्दिरसँ ईशान कोणमे थोड़ेक दूर पर एक कुटीमे रहैत छलाह, आ' ओतएसँ दक्षिण आधा मील दूर रामीक घर छलैक। नकुल चण्डीदासक ओतए पहुँचलाह तँ देखैत छथि, कवि मण्डलीमे छथि आ' रामी सेहो ततहि छथि। आगन्तुकके देखि रामी विदा भए गेलीह आ' नकुल चण्डीदासकेँ ठाँहि-पठाँहि कहलथिन्ह जे रामीक संग सर्वदाक हेतु छोड़ि अपन घर ओ समाजमे घुरि आउ। चण्डीदास कहलथिन्ह, "रामी हमरा प्राणहुँसँ प्रिय अछि आ' ओकरा अपूर्व आध्यात्मिक ज्ञान छैक।" चण्डीदासक दृढ़तासँ नकुलकेँ विश्वास भए गेलन्हि आ' ओ चण्डीदाससँ आध्यात्मिक उपदेशक याचना कएलन्हि। चण्डीदास हुनका सन्तुष्ट नहि कए सकलाह, तेँ हुनका रामीक निकट पठओलथिन्ह। नकुल जखन रामीक ओतए पहुँचलाह तँ ई देखि विस्मित भए गेलाह जे चण्डीदास पहिनहि ओतए पहुँचि गेल छथि। नकुल रामीक चरण-धूलि लेबाक हेतु

उद्यत भेलाह, जकर अर्थ ई छल जे ओ रामीकेँ अपन गुरु बनबए चाहैत छथि। चण्डीदास ओ रामी हुनका उपदेशार्थ मध्यरात्रिमे आबए कहलथिन्ह। नकुल घुरिकेँ राजाक ओतए अएलाह आ' हुनका सभ हाल कहलथिन्ह। निष्कासनक आदेश घुराए लेल गेल आ' चण्डीदास पुनः दरबारमे ओ समाजमे प्रतिष्ठापित कएल गेलाह। नकुल पूर्वप्रतिज्ञानुसार चण्डीदास ओ रामीसँ दीक्षा लेलन्हि।

चण्डीदास अपन रचनाक गान ओ अभिनयक हेतु एकटा पार्टी बनओने रहथि तथा ओ अपन पार्टीमे एकमात्र गायक नहि तँ प्रमुख अवश्य छलाह। गौड़क सुल्तान हुनका दरबारमे प्रदर्शन करबाक हेतु आमंत्रित कएलन्हि। सुल्तानक बेगम, जे चीकक भीतर बैसलि रहथि, चण्डीदासक रूपलावण्य ओ कला-कौशल देखि, मुग्ध भए गेलीह। ओ ततेक मुग्ध भए गेलीह जे ओहि कवि-कलाकारक प्रशंसोद्गारकेँ अपन पतिसँ अलक्षित नहि राखि सकलीह। बेगमक प्रति सुल्तानकेँ प्रगाढ़ प्रेम छलन्हि, तेँ हुनक ई क्षणिक चूक तँ माफ कए देलन्हि, किन्तु चण्डीदास दण्डसँ नहि बँचलाह। हुनका कठोरतम दण्ड देल गेल। हुकुम भेल जे हुनक क्रूरतापूर्वक वध कएल जाए। ओ हाथीक पीठपरसँ धकेलि देल गेलाह ओ हाथी हुनका पीचिकेँ मारि देलक। जखन ओ हाथीपरसँ खसाओल जाए लगलाह तखन रामीकेँ निम्नलिखित पद्यमे संवाद देलन्हि:—

शुन प्रिया रजकिनी आशके हाराइलाम प्राणो
एबार तराबो तुमि मोरे।

"सुनू हे प्रिय धोबिनि, बेगमकेँ मोहित करबाक कारणेँ हम प्राण गमाए रहल छी। एहि बेर अहाँ हमरा बचाए लिअ।"

जा' रामी ओहि पद्यक उत्तरार्धकेँ पूरा कए उत्तर देलन्हि ता' जे होएबाक छल से भए चुकल छल।

बेगम सहित नेह हा नाथ खुयाले देह
प्राणे माइल ए राजा गोबांरे।

"बेगमसँ प्रेम करबाक कारण, हा नाथ, अहाँ अपन प्राण गमओलहुँ, ई गमार (अरसिक) राजा अहाँक प्राण लेलक।"

एहिसँ कनेक भिन्न परिणाम एहि कथाक द्वितीय रूपान्तरमे पाओल जाइत अछि। चण्डीदास चारवाला एक हाँतमे गवैत छलाह। एकाँ-एक चार खसि पड़ल। कवि-गायक ओहि तर ठामहि मरि गेलाह ओ गृहस्वामिनी कनैत-कनैत बताहि भए गेलीह।

चारिम कथा 'भक्त-चरितामृत'मे अछि। एहि ग्रन्थमे पूर्वक कतिपय सन्त पुरुष ओ महिलालोकनिक जीवन-चरित ओ घटनावली संकलित अछि आ संकलनकर्ता थिकाह उत्तर बंगालक जगन्नाथदास। ई कथा दन्तकथाक सरणिपर अछि।

पूर्वदेशमे नानुर नामक एक गाम छल। ततए एक कुलीन ब्राह्मण परिवार बसैत छल। ओहि परिवारक पुत्र छलाह चण्डीदास। ई देखबामे तँ सुन्दर छलाह किन्तु पढ़बामे मन नहि देथि। पिता लाख चेष्टा कएलन्हि, अपन बेटाकेँ बाट नहि धराए सकलाह। अन्तमे अकच्छ भए ओ पत्नीकेँ आज्ञा देलन्हि जे हिनका थारीमे भातक बदला छाउर परसि दिऔन्ह। माता से कोना करतीह, परन्तु पतिव्रता स्त्री पतिक इच्छाक विरुद्ध नहि भए सकैत अछि। अतः ओ अपना पुत्रक थारीमे भात तँ देलन्हि किन्तु थारीमे एक चुटकी छाउर सेहो राखि देलन्हि। चण्डीदास से देखि माएसँ पुछलन्हि जे ई की। ओ बापक आज्ञा सुनाए देलथिन्ह। चण्डीदासकेँ ई बात बड़ लगलन्हि, ओ तुरन्त घर छोड़ि बहराए गेलाह। गामक बाहर एकटा बाशुलीक थान (पुष्पकुंज) छल। ओ ओतए आबि विश्रान्त भए बैसि गेलाह। ओ आत्महत्या करबाक नेआर करए लगलाह कि भगवती बाशुली हुनका समक्ष साक्षात् प्रकट भेलीह आ हुनका आत्महत्या करबासँ मना कएलथिन्ह। चण्डीदास उत्तर देलथिन्ह - "माय-बाप हमरा घरसँ बैलाए देलक अछि, तेँ हम नहि जीवी सएह नीक।" बाशुली हुनका आशीर्वाद दए प्रसन्न कएलन्हि आ' गछलथिन्ह जे अहाँकेँ कवि ओ पण्डित रूपमे प्रसिद्ध बनायब। बाशुलीक उपदेशानुसार चण्डीदास घुरिकेँ घर दिस विदा भेलाह।

चण्डीदास जखनहि गाममे पैसलाह तखनहि देखलन्हि जे एक सुन्दरि कन्या एक खोपड़ीक देहरि लग ठाढ़ि अछि। ओकर नाम तारा छलैक आ ओ धोबि जातिक छलि। चण्डीदास ओकरा रूपपर मोहित भए ओकरा पर आसक्त भए गेलाह। हुनका ओहने भावना होअए लगलन्हि जेहन राधाकेँ पहिल बेरि

देखलापर कृष्णकेँ भेल होएतन्हि। घर पहुँचलापर चण्डीदास तुरन्त निम्न-लिखित गीत लिखलन्हि जे हुनक कवित्वक प्रथम स्फुरण थिक:—

अहा, अहा ! की नयनाभिराम ! के थिक ई अनुपम रूपवती कन्या जे हमर हृदयकेँ हरण कए लेलक अछि ?

हम अपनाकेँ परावृत्त नहि कए सकैत छी। एखनहु हमर हृदय विवश ओ व्याकुल अछि। नोरमे हमर प्राण भासल जाए रहल अछि।

धैर्य नहि रहल। ज्ञान-ध्यान सभ हेराए गेल। चित्त बताह भए गेल। कोनो काजक उत्साह नहि अछि।

ओ कोन वस्तु छल जे हम एतेक अप्रत्याशित रूपमे देखल।

हम एकरूप देखल आ, तखनसँ हमर आँखि आ मन ओहीमे बाझल अछि।

चण्डीदास कहैत छथि, बासुलीक आज्ञाक अनुसरण कए हम अपन सुधि-बुधि गमाए देलहुँ।

बासुलीक कृपासँ दुहू प्रेमीक मिलन भेल ओ चण्डीदास तुरन्त कविक ख्याति पओलन्हि।

कतोक प्रकीर्ण गीत ओ ताहिमे अनुषक्त समस्या

सोलहम शताब्दीमे लिखित कोनहु ग्रन्थमे चण्डीदासक भनिताबला कोनो गीत उद्धृत नहि पाओल जाइत अछि, आ ने एहन कोनो गीत कोनहु प्राचीन कीर्तन-गीत-संग्रहे-सभमे संगृहीत भेटैत अछि। एहन कोनहु हस्त-लेखमे, जकरा निश्चित रूपेँ सतरहम शताब्दीक कहि सकैत छी, चण्डीदासक एको टा गीत नहि पबैत छी। एहि विचित्रताक समाधानार्थ ई मानि लेल गेल अछि जे एहि कालमे वैष्णवलोकनि मध्य चण्डीदासक जे गीत-सभ प्रसिद्ध छल से सम्भवत: कतोक उत्कृष्ट कीर्तन- रचयिता द्वारा हुनक अनुकरणमे बनाओल आ सुधारल गीत छल, आ सुधारबाक क्रममे ओहिमे चण्डीदासक स्थानमे दोसर नाम जोड़ाए गेल छल। एहि प्रकारेँ नाम-परिवर्तन अधिकतर कीर्तन- गायकलोकनि कएने होएताह। कतोक गीतक विषयमे वा अधिकांश गीतक विषयमे ई बात सत्य भए सकैत अछि, किन्तु सभ गीतक विषय मे से नहि कहल जाए सकैत अछि। एकर एहूसँ नीक एक आओर समाधान

अछि जाहिमे ई मानल जाइत अछि जे विद्यापति प्रभृति भाषा-गीत-रचयिता जेकाँ चण्डीदास सेहो कखनहु-कखनहु अपन रचनामे—खास कए चौपाइ, दोहा आदि छोट-छोट पदमे—भनिता नहि दैत छलाह। कीर्तनावली सहित जे वैष्णव ग्रन्थ चैतन्य-सम्प्रदायक आरम्भसँ दुइ शताब्दीक बीच लिखल गेल अछि, ताहिमे कतोक छोट-छोट गीत-सभ दू पाद वा चारि पाद बाला अछि (जे ध्रुव गीत वा धूआ कहवैत छल)।

निम्नलिखित गीत चण्डीदासक रचित मानबामे कोनो आपत्ति नहि होयबाक चाही जे ओहि समयमे चैतन्यक मित्र ओ सहपाठी मुकुन्द द्वारा गाओल गेल छल जखन संन्यास लेलाक बाद चैतन्यकेँ अद्वैत अपना घरमे स्वागत कएलथिन्ह—

हा हा प्राणप्रिय सखि किना हइल मोरे।
कानु प्रेम बिसे मोर तनु मन जरे॥
रात्रि दिने पोरे मन सोयाथ ना पाओँ।
याहां गेले कानु पाओँ तहां उड़ि जाओँ॥

("हा प्राणप्रिय मित्र, हमारा की भए गेल अछि? कृष्ण-प्रेम रूपी विष हमर शरीर ओ मनकेँ अभिभूत कए रहल अछि। दिवारात्रि हमर हृदयमे आगि लागल रहैत अछि। हमरा लेल शान्ति कतहु नहि। मन होइत अछि जे उड़िकेँ ततए चल जाइ जतए कृष्ण भेटथि।")

एहि गीतक पूर्तिमे जे कतोक पंगु ओ स्पष्टतः जाली पंक्ति सभ जोड़ल भेटैत अछि तकरा कोनो चण्डीदासक प्रशंसक द्वारा ओकर प्राप्तिक दावी वास्तवमे अनावश्यक छल।

ठीक-ठीक वैष्णव साहित्य नहि कहएबाक योग्य अठारहम शताब्दीक जे कतोक कथा-काव्य गाओल जाइत छल वा गएबाक हेतु लिखल गेल छल ताहि महक किछु 'ध्रुव गीत' द्विपदी प्राचीन चण्डीदास ओ कृष्णकीर्तनक स्मरण करबैत अछि। निम्नलिखित ध्रुव गीत आजुक हुगली जिलाक निवासी 'कविचन्द्र' रामकृष्णक लिखल सतरहम शताब्दीक उत्तरार्धक शिवविषयक काव्यक अठारहम शताब्दीक आदिभागक हस्तलेखसँ लेल गेल अछि:—

तोमा देखिले परान येन पाइ ।
देखा दिते कत धन चाइ ।।

("अहाँकें देखलासँ बूझि पड़ैछ जेना प्राण पलटि आएल । कतेक धन देलापर अहाँ दर्शन देब ?")

बड़ायि गोआर ना आसिब एना पथे ।
मजिल महत्व मोर राखालेर हाते ।।

("हे बड़ायि, हम फेर एहि बाटें कहिओ नहि आएब । एहि गोआरक करनीसँ हमर सभ प्रतिष्ठा समाप्त भए गेल। ")

बुड़ि बले नातिया ना रे हेर ।
हाथे निधि पाइया केन छाड़ ।।

("बूढ़ी कहलन्हि, हे नाति, एम्हर देखह । हाथ आएल निधिकें तोँ किएक छोड़ैत छह ?")

तुमि आर-पार राधा राख ।
दाण्डाइया विकलि आर कत देख ।।

("तोँ राधाकें ओहि पार लए जाह ।
कतेक काल धरि ठाढ़ भेल तोँ (राधाक) विकलता देखैत रहबह ?")

४. सहजिआ गीत के लिखलन्हि ?

सनातन, जीव ओ कृष्णदास लिखैत छथि जे चण्डीदास कृष्ण-प्रणय-लीला- विषयक गीत तथा/वा काव्यक प्रख्यात लेखक छलाह। ई सभ व्यक्ति सोलहम शताब्दीमे भेल छलाह आ सभ गोटए वृन्दावनमे निवास कए ग्रन्थरचना करबासँ पूर्व ओहि क्षेत्रक वासी छलाह जाहिमे उत्तर राढ़ तथा दक्षिण वरेन्द्री पड़ैत अछि। तत:पर लगभग दू शताब्दीक अन्तरालक बाद साहित्यमे पुन: चण्डीदासक चर्चा भेटैत अछि आ' से भटैत अछि केवल तान्त्रिक वैष्णव सम्प्रदायक प्रतिष्ठित साधकक रूपमे तथा एहि सम्प्रदायक मुख्य मार्गदर्शक रहस्य गीतक रचयिताक रूपमे। आ एहि रूपमे ई परवर्ती कालहुमे स्मरणीय रहलाह। चण्डीदासक जाहि गीत-सभक (ओ गीतक द्विपदी-सभक) उपयोग सहजिआ पन्थक लेखकलोकनि कएने छथि से सभ की तँ स्पष्टत: शृंगारिक (गोपनीय) वा प्रतीकात्मक अछि अथवा ताहि रूपेँ व्याख्या करबाक योग्य अछि। कहि चुकल छी जे आलोच्य कविक जीवनक प्रसंग जे कथासभ अछि से एहने कतोक गीतक परिपार्श्वमे प्रकल्पित अछि। आब प्रश्न उठैत अछि : की जाहि कवि चण्डीदासक प्रशंसा चैतन्य ओ हुनक समसामयिक लोकनि कएने छथि सएह एहि रहस्यात्मक वा प्रतीकात्मक गीतो सभक रचयिता थिकाह ? चण्डीदासक मर्मज्ञ विद्वानलोकनि एकर उत्तर नकारात्मक दैत छथि। एहि गीत सभक, जे अपेक्षाकृत पूर्व कालक मानल जाए सकैत अछि, काव्यात्मक मूल्य ततेक न्यून अछि जे ओकरा अन्य गीत-सभक आधारपर उत्तम कविरूपेँ विख्यात चण्डीदासक रचना मानब बड़ कठिन लगैत अछि। ई जे आपत्ति उठाओल गेल अछि तकरा ओहिना टारि देब सोझ नहि अछि, मुदा इहो कहहि पड़त जे एहि प्रश्नपर किछु पुनर्विचार करबाक अवसर अवश्य छैक। सहज उपासना तथा परकीया साधना, जेना सामान्यत: मानल जाइत अछि, चैतन्य, स्वरूपदामोदर, रघुनाथदास ओ कृष्णदास कविराजक परवर्ती कालमे नहि आएल अछि।

आठम शताब्दी वा ताहूसँ पूर्वकालसँ बंगालमे तथा पूर्वीय भारतक अन्यान्य भागमे व्यापक रूपसँ प्रचलित तान्त्रिक महायान बौद्ध सम्प्रदायपर जे भक्तिमार्गीय उपासना अधिष्ठित भए गेल ताहीसँ एकर विकास भेल अछि।

महायान-तन्त्रमार्गमे किछु भक्तितत्व स्वतः निहित छलैक। महायानक इएह भक्तितत्व कृष्ण-भक्तिधारामे मिलि गेलैक ओ फलतः तान्त्रिक महायान एक नवीन रहस्यवादी वैष्णव तन्त्रमार्गक रूप धारण कएलक। ई सम्प्रदाय-विभाजन क्रमिक भेल होएत। जाहि समयमे महायानभक्तिमार्ग (किछु तन्त्र-मार्गसँ मिश्रित) कृष्ण-भक्ति सम्प्रदाय पर अधिष्ठित भेल ताहि समय हिन्दू तन्त्रमार्ग स्थापित भए चुकल छल। ई घटना चैतन्यक जीवन-कालमे भेल आ तेँ ईश्वरक प्रति हिनक गाढ़ानुरागे एहि नव-तान्त्रिक वैष्णव धर्मकेँ दूषित तत्व सभसँ विभक्त कए देलक। स्वरूपदामोदर (चैतन्यक घनिष्ठ मित्र एक संगीतपारंगत रहस्यसाधक, जे चैतन्यकेँ हुनक प्रिय गीत-सभ, जाहिमे चण्डीदाक गीत सेहो रहैत छल, सुनबैत छलाह), रघुनाथदास (स्वरूपक एक मात्र शिष्य) तथा कृष्णदास कविराज (रघुनाथक प्रशंसक भक्त), इएह तीनू गोटए मुख्य रूपेँ एहि नवीन पद्धतिक (मार्गक) संस्थापक थिकाह, जाहिमे परकीयाक प्रति अवैध प्रेमक सदृश रागानुगा पद्धतिक अनुसरण द्वारा ईश्वरक अनुभूति होइत अछि। कृष्णक प्रति राधाक प्रेम प्रगाढ़ ओ असीम अछि ई परमात्मासँ मिलबाक जीवात्माक इच्छाक उत्तम प्रतीकक काज करैत अछि। राधा कृष्णक पत्नी नहि थिकथिन्ह आ हुनका दुनूक मिलन सामाजिक नियमानुसार निन्दनीय थिक। महिलाकेँ अपन स्वामीक प्रति जेहन अनुराग होइत छैक ताहिसँ बहुत अधिक गम्भीर अनुराग पर-पुरुषक प्रति होइत छैक। एहि प्रकारक प्रेम परकीय कहबैत अछि ओ भक्तिक ई मार्ग 'परकीया' कहबैत अछि। ई भाव निम्नलिखित संस्कृत श्लोकसँ स्पष्ट होइत अछि जे चैतन्यकेँ सनातन पठओने छलथिन्ह जखन ओ सुल्तानक नोकरी करैत छलाह :—

परव्यसनिनी नारी व्यग्रापि गृहकर्मसु।
तदेवास्वादयत्यन्तर्नवसंगरसायनम्॥

("पर-पुरुषमे अनुरक्त नारी नाना प्रकारक घरक काजमे व्यग्र रहितहुँ हृदयमे सतत ओहि प्रिय-सगंम-रसक आस्वादन करैं अछि।")

बंगलामे साहित्य- सर्जनाक आदिम युगहिसँ एहन गीत-सभ प्रचलित अछि जाहिमे दू अर्थ रहैत अछि, एक वाच्य आ दोसर आध्यात्मिक संकेतसँ युक्त व्यंग्य वा प्रतीकात्मक अर्थ। चर्या-गीतक परम्परा चण्डीदास ओ अन्यान्य कविक रहस्यगीत सभमे पुनः जागृत भेल अछि। ई मानबामे कोनो तर्क नहि अछि जे ओ परम्परा लुप्त भए गेल छल आ सहजिआ गीत-सभमे

जे पुनः ओकर दर्शन होइत अछि से एक नवीन सर्जना थिक वा कतोक शताब्दी धरि सूत्रल भावनाक पुनर्जागरण थिक। वास्तवमे एहि प्रकारक रहस्यात्मक वा कूट पद्य सामान्यतः द्विपदी, सोलहम शताब्दीक आरम्भहुमे प्रचलित छल। अद्वैत आचार्य एहि प्रकारक रचनामे पारंगत मानल जाइत छलाह।

अतः कोनो रहस्य-गीतक वास्तविकताक अर्थात् ओ चण्डीदासक रचित थिक एहि तथ्यक यथार्थताक जाँच प्रथमतः केवल आन्तरिक साक्ष्यक आधारपर करबाक होएत; ओकर विषय-वस्तु, ओकर भाषा, ओकर व्याकरण ओ ओकर शब्दावली देखिकें करए पड़त। उदाहरणार्थ, चण्डीदासक भनिताबाला कतोक रहस्य-गीतमे 'आशक' शब्द आएल अछि जकर अर्थ 'प्रेम' थिक। ई अरबी भाषाक शब्द थिक जे अठारहम शताब्दीक मध्यकालसँ पहिने सामान्य साहित्यमे कदाचिते पाओल जाइत अछि। एहन गीत, वा वास्तवमे एहन पाठबाला गीत, जे हमरा लोकनिकें उपलब्ध अछि, सोलहमो शताब्दीक कविक रचना नहि भए सकैत अछि, पूर्वतर शताब्दीक कविक कथे कोन। ई मानहि पड़त जे अपन नामें वा चण्डीदासक छद्मनामें सहजिआ गीत लिखनिहार अनेक व्यक्ति भेल छलाह। 'चण्डीदास' नामधारी एहन दू व्यक्तिक परिचय तँ स्पष्टतः भेटैत अछि। एक छलाह नरोत्तमदासक शिष्य आ' हुनक काल सोलहम शताब्दीक उत्तरार्ध थिक; दोसर छलाह ओ कवि जनिक नाम वा कविनाम 'तरुणीरमण' छल आ' ओ अठारहम शताब्दीक अन्तभागमे भेल रहथि। सहजिआ मार्गक सकल लेखक ई बात कहने छथि जे नरोत्तमदास सहज वा परकीया मार्गक एक अग्रगण्य साधक छलाह।

जयदेवसँ आरम्भ कए वृन्दावनक गोस्वामी गुरु-लोकनिसहित एहि मार्गक जतेक पूर्वाचार्य लोकनि छथि तनिक उल्लेख केवल शोभार्थ कएल गेल छन्हि, सहज वा परकीया पद्धतिसँ हुनकालोकनिक सम्पर्क केवल एहि बातसँ जोड़ल गेल अछि जे हुनकालोकनिकें एक-एक प्रेमिका छलन्हि। एहि गुरुमण्डलीमे कृष्णदास कविराज सेहो समाविष्ट छथि, किन्तु हिनका एहि सम्प्रदायसँ प्रत्यक्ष सम्बन्ध छन्हि। हिनक चैतन्यचरितामृत एहि मार्गक आधारभूत ओ पवित्रतम ग्रन्थ मानल जाइत अछि, तथा एहि मार्गक यथार्थ अन्यतम गुरु नरोत्तमदास कृष्णदासक उक्त ग्रन्थसँ नितान्त प्रभावित

छलाह। नरोत्तम संन्यास तं नहि लेलन्हि, किन्तु अविवाहित रहलाह आ पैतृक सम्पत्तिसँ विरक्त रहलाह। हुनक जीवन भक्ति, स्तुति ओ गीतमय छल।

कीर्तन-शैलीक संगीत नरोत्तमहिक प्रयासक फल थिक, जाहिमेँ सहायक भेल छलाह हुनक कतोक मित्र ओ संगीलोकनि। इएह सर्वप्रथम संगीतकेँ वैष्णव साधनाक मुख्य उपकरण बनओलन्हि। नरोत्तम सहजिआ छलाह; ई मानबाक कोनो प्रमाण नहि भेटैत अछि; जे भेटैत अछि से एतबे जे संगीतकेँ साधनाक उपाय बनओलन्हिहार सहजिआलोकनिक द्वारा हुनक उल्लेख कयल गेल अछि। नरोत्तम सहजिआ गीत बरु नहिओ लिखने होथि, किन्तु ओ जनैत अवश्य छलाह। ओ कायस्थ छलाह, परन्तु अनेक ब्राह्मण हुनक भक्त शिष्य छलथिन्ह। ताहिमे एक चण्डीदास सेहो छलाह। ओ गीत लिखने छथि, आ' एक गीतमे अपन गुरुक स्तुति कएने छथि। हमर धारणा अछि जे 'द्विज' (ब्राह्मण) चण्डीदास प्राचीन सहजिआ गीत-सभक तथा राधा-कृष्णकथा-विषयक प्रचुर गीतसभक रचयिता छलाह। नरोत्तम खेतरीमे राधा ओ कृष्णक तथा चैतन्य ओ नित्यानन्दक कतिपय मूर्तिक स्थापनाक अवसरपर एक विशाल समारोह आयोजित कएने रहथि जाहिमे समस्त अग्रगण्य वैष्णवलोकनि जुटल छलाह। एही अवसरपर कीर्तन-संगीत अपन वर्तमान स्वरूप धारलक। कहल गेल अछि जेँ एहि अवसर पर चण्डीदासहुक गीत गाओल गेल आ बड़ प्रशंसित भेल। जँ एतए विद्यापतिक गीतक स्पष्ट उल्लेख नहि अछि तेँ चण्डीदासक प्रसंगमे हमर धारणा अछि जे ओ नरोत्तमक शिष्य 'द्विज' चण्डीदास छल होएताह।

चण्डीदासक कतोक गीतक भनितामे जे 'द्विज' विशेषण अछि से विशेष व्यंजक अछि। ई 'बड़ु' केर विपरीतार्थक थिक। प्राचीन चण्डीदास जनिक गीत चैतन्यकेँ ज्ञात छलन्हि, हुनकामे 'बड़ु' विशेषण लागल रहओ वा नहि, सम्भवतः ब्राह्मण नहि छलाह। ई द्वितीय चण्डीदास ब्राह्मण रहथि, आ' ई प्राचीन चण्डीदासक गीतसँ अपना गीतकेँ पृथक् बाक हेतु भनितामे, जतए छन्दक अनुसार सम्भव छल, अपन जातिवाचक नाम 'द्विज' जोड़ि देलन्हि। चण्डीदासक कतोक गीतमे अप्रचलित 'बड़ु' शब्दक स्थानमे प्रचलित 'द्विज' शब्द (ओ प्रायः तद्विलोम) जे कए देल गेल अछि से तँ अपेक्षाकृत हालक बात थिक।

एतए हम 'द्विज' चण्डीदासक तीन गीत अनुवाद रूपमे[1] उद्धृत करैत छी :—

(१)

सइ केवा शुनाइले श्याम नाम ।
काणेर भितर दिया मरमे पशिल गो
आकुल करिल मोर प्राण ।। ध्रु० ।।
ना जानि कतेक मधु श्याम नामे आछे गो
वदन छाड़िते नाहि पारे ।
जपिते-जपिते नाम अवश करिल गो
केमने पाइव सइ तारे ।।
नाम परतापे यार ऐछन करिल गो
अंगेर परशे किबा हय ।
येखाने वसति तार नयाने देखिया गो
युवती धरमे कैछे रय ।।
पासरिते करि मने पासरा न पाय गो
कि करिव कि हवे उपाय ।
कहे द्विज चण्डीदासे श्याम नव रसे गो
ठेकिला राजार झि ।।

(२)

कि मोहिनी जान बन्धु की मोहिनी जान ।
अवलार प्राण निते नाहि तोमा-हेन ।।
राति कैलुँ दिवस दिवस कैलुँ राति ।
बुझिते नारिलुँ बन्धु तोमार पिरीति ।।
घर कैलुँ बाहिर बाहिर कैलुँ घर ।
पर कैलुँ आपन आपन कैलुँ पर ।।
कोन विधि सिरिजले सोनेर शेउलि ।
एमन व्यथित नाइ डाके राधा बलि ।।

---

१. एहि मैथिली अनुवादमे मूल गीत सएह देल गेल अछि (अनुवादक) ।

बन्धु तुमि यदि मोरे निदारुण हओ।
मरिब तोमार आगे दाँड़ाइया रओ॥
बाशुली आदेशे द्विज चण्डीदासे कय।
परेर लागिआ कि आपना पर हय॥

(३)

पिरित-सुखेर सागर देखिया नाहिते नामिलाम ताय।
नाहिया उठिया फिरिया चाहिते लागिल दुखेर भय॥
केवा निरमिल प्रेम सरोवर निरमल तार जल।
दुखेर मकर फिरे निरन्तर प्राण करे ढलमल॥
गुरुजन ज्वाला जलेर शिहाला पड़सी जीयल माछे।
कूल पानीफल काँटाय सकल सलिल वेड़िया आछे॥
कलङ्क पानाय सदा लागे गाय छानिया खाइल यदि।
अन्तर बाहिरे टुकुटुकु करे सुखे दुख दिल विधि॥
कहे चण्डीदास सुन विनोदिनी सुख-दुख दुटि भाइ।
सुखेर लागिया जे करे पिरीति दुख जाय तार ठाइ॥

निम्नलिखित गीतमे राधा ओ कृष्णक कतहु नामोल्लेख नहि अछि। कहि सकैत छी जे एहिमे कवि अपने अनुभव चित्रित कएने छथि, आ' इएह मतसिद्धान्त-चन्द्रोदयक रचयिता व्यक्त कएने छथि। एहिमे अन्तिम पंक्ति चण्डीदासक उक्ति थिक ओ शेष हुनक प्रेमिकाक :—

ए घोर रजनी मेघेर घटा केमन आइल बाटे।
आङ्गिनार माझे बन्धुआ भिजिछे देखिया पराण फाटे॥
सइ आर कि बलिब तोरे।
अनेक पुण्यफले सेहेन बन्धुआ आसिया मिलल मोरे॥
घरे गुरुजन ननदी दारुण बिलम्बे बाहिर हैलुँ।
आहा मरि मरि सँकेत करिया कत ना यन्त्रणा दिलुँ॥
बन्धुर पिरीति आरति देखिया मोर मने हेन करे।
कलङ्केर डालि माथाय करिया आनल भेजाइ घरे॥
आपनार दुख सुख करि माने आमरा दुखेर दुखी।
चण्डीदास कहे बन्धुर पिरीति शुनिया जगत सुखी॥

निम्नलिखित गीत, जे सम्भवतः द्विज चण्डीदासक लिखल थिक, विवर्त्त विलासमे उद्धृत अछि :—

'रसिक [१] रसिक सभ कहैत अछि किन्तु रसिक कतहु नहि भेटैत छथि।
जे सोचत, गुनत आ चिन्तन करत तकरा तँ लाखहुमे एक नहि भेटतैक।
हे बन्धु, ककरा हम रसिक कहू ?
वस्तुतः रसिक ओ कहाए सकैत छथि जे विभिन्न प्रकारक मसाला मिश्रित कए रस बढ़बैत छथि।
ओ अनुपम स्वर्णपात्र-सभमे रस भरि-भरि अपना आगाँ रखने रहैत छथि।
जे चाहए से भरि छाक पीबओ, मुदा तैओ तृप्ति नहि होएतैक, आ' ओ ओहीमे डूबि जाएत।
ओ दिन-राति भरि-भरि आँजुर रस पिबैत रहत,
परन्तु एहिसँ जँ-जँ रस खर्च होइत जतैक तँ-तँ ओ दुगुना होइत जाएत, आ एहिसँ जँ एक बिन्दु छलकि जएतैक तँ स्वतः धारा-प्रवाह होअए लगतैक।
चण्डीदास कहैत छथि : हे रसवती रमणी, हमर बात सुनह। तोँ रसक निर्झर थिकह।
यदि कोनो रसिक जनकेँ रसिक प्रेयसी नहि भेटैत छन्हि तँ दुगुन अभागक बात थिक।"

निम्नलिखित गीतमे किछु पारिभाषिक वस्तु अछि तथा ई गीत प्राचीन बंगला चर्यागीत-सभक रहस्यात्मक शैलीमे लिखल अछि। इहो विवर्त-विलाससँ लेल गेल अछि :—

---

१. व्युत्पत्तिक अनुसार 'रसिक' सँ थिक जे रस जानए, ओकर आस्वादन करए वा रस बनाबए (एतए रस थिक सत्वोद्रेक)। रहस्यात्मक वैष्णव मार्गमे रसिक ओ व्यक्ति कहबैत अछि जे आध्यात्मिक ओ आधिभौतिक चरम अनुभव पाबि सभ प्रकारक द्वैतसँ ऊपर पहुँचि जीवन ओ मृत्युक सीमासँ अतीत भए गेल रहैत अछि। सहजिआ मार्गमे 'रसिक' शब्दक प्रयोग परकीया साधनाक श्रेष्ठ गुरुक अर्थमे होइत अछि।

काम ओ मदन दुनू एक जोड़ा थिक। आ' सहज पुरुष ओकर पितामह थिकैक।

ई देखि पड़ैत अछि : दूरमे नहि अछि, किन्तु पर्याप्त लगमे अछि।

ई भित्तिपर (वा हृदयमे) लिखल चित्र जकाँ संसारक भीतर अछि।

ई मणिधर सापक सदृश अछि, आ' ई जीव अपन स्वरूप बिसरि जाइत अछि; ओ मणि एकर सहायक नहि होइत छैक

देख गोरोचना गाइक यकृतमे उत्पन्न होइत अछि, परन्तु ओकरा अपन महत्व नहि बूझल रहैत छैक।

डारिमे लटकल फल जड़िकेँ डोलओनहुँ नहि खसत।

निद्राविवश रहनापर अपन आँखि ललाट दिस घुमाए सकैत छी, ई हृदयपर नचैत अछि आ ओ नारी कहबैत अछि।

घोर निशामे सता आ सूगी जे बतिआइत अछि, से बासुलीक कृपासँ चण्डीदासकेँ किछु-किछु बोधगम्य होइत छन्हि।''

चण्डीदासक नाम (ओ ख्याति)क, विशेषत: सहजिआ गीतक विषयमे सभसँ परवर्ती कालक दावीदार 'तरुणीरमण' बूझि पड़ैत छथि। हिनक पश्चतम सम्भाव्य काल सिद्धान्तचन्द्रोदयक संकलन-काल, अर्थात् अठारहम शताब्दीक अन्त ओ उनैसम शताब्दीक आरम्भ, भए सकैत अछि।

---

५. श्रीकृष्णकीर्त्तन

'श्रीकृष्णकीर्तन' अल्पमात्र विकृत रूपमे हमरालोकनिकेँ उपलब्ध अछि। एहिमे उक्ति-प्रत्युक्ति ओ एकोक्ति शैलीक लगभग ४१५ गीत अछि, जाहिमे राधाकृष्ण प्रणय-लीला समष्टि रूपमे चित्रित अछि; यथा कृष्णक एक वालिकाक प्रति अनुराग, जे बएसमे सम्भवतः हुनकासँ जेठि छलि हो सम्बन्धे मामी छलि; हुनक पूर्ण वशीकरण तथा अन्तमे उपेक्षापूर्वक परित्याग। ई कृष्णमंगल नामक कथा-काव्यसँ एकदम भिन्न प्रकारक अछि, जाहिमे लम्बा लम्बा वर्णनात्मक अनुच्छेद ('पयार' छन्दमे) बीच-बीचमे छोट-छोट गीत 'शिकलि' वा 'नाचाड़ि') सँ युक्त अछि। 'श्रीकृष्णकीर्तन'मे उक्ति प्रयुक्ति वा एकोक्ति गेय पद तथा कथासूत्रयोजक संस्कृत श्लोक, जे पाठकक हेतु सदा आवश्यक नहि, बुझि पड़ैत अछि जे मूलतः तेना विन्यस्त छल जाहिसँ संगीत-रूपक जेकाँ वा गीतबद्ध कठपुतरी नाच जेकाँ ई अभिनीत भए सकए; एकर ढाँचा ओहने-सन अछि जेहन प्राचीन आसामीमे शंकरदेवक नृत्य-रूपक अंकीया नाट सभक अछि। संस्कृत श्लोक ग्रन्थकारक योग्यता ओ कौशलक निदर्शन करैत अछि।

एकर कथा ओ गीत-सभ अनेक खंड (मूलार्थ 'मिसरीक ढेप') मे विभक्त अछि, जेना कतोक परवर्ती पुराण-सभमे पाओल जाइत अछि (यदि ई स्वरूपतः नाटक रहैत तँ एकर विभाजन 'खण्ड'मे नहि, 'अंक'मे कएल गेल रहैत)। परन्तु वस्तुतः ई बात विचित्र लगैत अछि जे अन्तिम भाग, जे सभसँ पैघ ओ उत्कृष्ट अछि, 'खण्ड' नहि कहल गेल अछि, एकरा आनो किछु अभिधान नहि देल गेल अछि। की कहिओ ई स्वतन्त्र ग्रन्थ छल ? एतए प्रसंगवश ई उल्लेखनीय जे 'राधाविरह' नामक एहि अन्तिम खण्डमे राधाकृष्णविषयक जेहन गीत-सभ छल तेहन गीत-सभ सोलहम शताब्दीक आरम्भहिसँ सुविख्यात अछि आ' 'श्रीकृष्णकीर्तन'क एहि खण्डक गीत सभ चण्डीदासक पूर्वतः ज्ञात उत्तम गीत सभक अत्यन्त सदृश अछि।

पहिल पात लुप्त अछि; निःसन्देह एहिमे मंगलाचरण ओ देवस्तुति छल होएत। कथारम्भ एहि प्रकारेँ अछि : धरणी राक्षसक अवतार कंससँ

पीड़ित भेलीह, ओ तेँ देवतालोकनि कष्टमे पड़लाह। ओ सभ विष्णुक ओतए गेलाह आ' हुनकासँ प्रार्थना कएलन्हि जे ओ मनुष्यक रूपमे अवतार लए कंसक संहार करथि। विष्णु स्वीकार कएलन्हि। एतए प्रथम खड ('जन्मखंड') समाप्त होइत अछि।

तकरा बाद मुख्य कथा आरम्भ होइत अछि। कृष्णक बूढ़ि मातामही बड़ायि नवयुवती राधाकेँ अपना संग लए अपन घर गोकुलसँ मथुरा नगरक हाट-बजार जाथि ओ ओतए नित्य गोरस बेचथि। एक दिन बूढ़ी किछु थाकलि सन छलीह, किन्तु से राधाकेँ बुझबा योग्य नहि भेलन्हि; ओ अगुआए गेलीह। राधा दूर चलि गेलीह आ' हुनका बाट भोतिआए गेलन्हि। बड़ायि आतुर भए राधाक प्रतीक्षा करए लगलीह। कृष्ण भेटलथिन्ह। हुनका पुछलथिन्ह जे 'अहाँ मथुराक रास्तामे राधाकेँ देखलिअन्हि अछि।' कृष्ण छद्म कए कहलथिन्ह जे 'हम राधाकेँ नहि चिन्हैत छिअन्हि, हुनक सविस्तार वर्णन कहू तँ कहब जे ओ भेटलीह की नहि।' बड़ायि उत्साहपूर्वक सुन्दरी राधाक रूपवर्णन सुनाबए लगलीह। ई वर्णन ठीक-ठीक अलंकार-शास्त्रक परम्परागत सरणिसँ कएल गेल अछि। राधाक रूप-यौवन-वर्णन सुनैत कृष्ण हुनकापर आसक्त भए हुनका पएबाक हेतु व्याकुल भए गेलाह। एहिमे बड़ायिसँ सहायता मङलन्हि। ओ दौत्य करब निःसंकोचपूर्वक स्वीकार कएलन्हि। कृष्णक दिससँ फूल-पान सनेस लए ओ राधाक लग गेलीह आ' कृष्णक समाद (प्रणय-निवेदन) सुनओलन्हि। राधा एकरा गारि बूझि कृष्णक पठाओल सनेस (फूल-पान) केँ फेँकि ओहि कुमति बृद्धाकेँ, जे हुनक संरक्षिका छलीह, अपन मनक भाव बुझाए देलन्हि। ओ दूती विस्मित आ निराश भए घुरि अइलीह आ कृष्णकेँ अपन विफलता सूचित कएलन्हि। कृष्णकेँ राधाक विषयमे ई भ्रम भए गेलन्हि जे ओ उपहारक तुच्छताक कारणेँ अप्रसन्न भेलीह अछि। ओ एकबेर पुनः बड़ायिकेँ पठओलन्हि आ' एहि बेर एक मूल्यवान साड़ी तथा आनो-आन नीक उपहार देलथिन्ह।

बड़ायि अइलीह। राधाक लग बैसलीह। दू-चारि शब्द बजलीह आ' उपहार-वस्तु सभ राधाक आगाँ राखि देलन्हि आ' मुह घुमाए घबराइलि-जकाँ ठिटिआए लगलीह।

(राधा) : कहिर कपुर ताम्बुल बड़ायि कहिर नेत पटोल ।
नेआली मह्ली आओर नाना फुल के दिआँ पठाइले मोर ।।

(वड़ायि): आइस राधा कहों तोम्हारे कृष्णेर पाँच आवथा ।
विरह जरें तेहें जरिला पाठाइल तोम्हा वेथाँ ।।

जखनहि ओ सुन्दरी ई वात सुनलन्हि कि अत्यन्त अरुचि देखबैत अपन कपार पिटलन्हि । कृष्णक पठाओल उपहारकें लात मारि देलन्हि । बड़ायि उठिकें राधाकें कहलथिन्ह : 'ई तों अनुचित कएलह । नन्दतनयसँ के नहि प्रेम करैत अछि, आ' तनिक जीवन तोहर कृपापर अवलम्बित छन्हि :

(राधा) : घरेर सामी मोर सर्व्वांगे सुन्दर आछे सुलक्षण देह ।
नान्देर घरेर गरु राखोआल ता समे कि मोर नेह ।।

(वड़ायि): ये देव स्मरणे पाप-विमोचने देखिल हए मुकती ।
से देव सने नेहा बाढ़ाइले हए विष्णुपुरे स्थिती ।।

(राधा) : धिक जाऊ नारीर जीवन देहें पसु तार पती ।
पर पुरुषेर नेहाएँ याहार विष्णुपुरे स्थिति ।।

(कवि) : नागर शेखर नान्देर सुन्दर उपेखिल मतिमोषे ।
वासलीचरण शिरे वन्दिआँ गाइल बडु चण्डीदासे ।।

एतए मूलग्रन्थमे एक त्रुटि प्रतीत होइत अछि । बड़ायि कृष्णक दिससँ आओर तर्क देने होइथिन्ह । ओ कहने होइथिन्ह जे कृष्ण लंठ छथि आ' राधाकें सोझ रूपें छाड़ि नहि सकैत छथिन्ह । राधा ई संकेत बुझि गेलीह आ मन्द स्वरें बजलीह जे 'हम एखन काँच कुमारि छी, तें प्रौढ़ नायक सँ संग करबामे डराइत छी । ओ एक-दू साल प्रतीक्षा करथु । जखन हम सेआनि भए जाएब तखन हुनक मनोरथ पुरएबन्हि ।' बड़ायि घुरिकें कृष्णक समीप अइलीह आ ठीक-ठीक सभ हाल कहि देलथिन्ह ।

कृष्ण रातिमे सपना देखलनि जे ओ राधाक संग एक पलंग पर सूतल छथि । हुनक काम-वासना तीव्र भए उठलन्हि । ओ कामज्वरसँ पीड़ित भए गेलाह । भिनसर भेलापर ओ किछु नीक-नीक सनेसक संग पुनः बड़ायिकें पठाए संवाद देलथिन्ह जे 'एको बेर मिलन होतँ हम कृतार्थ भए जाएब ।'

वृद्धाक एहि निवेदन पर राधा क्रुद्ध भए उठलीह। चुगिलाहि कहि हुनका गालपर एक थापड़ लगाए देलथिन्ह। बड़ायि राधाक एहि अप्रत्याशित आचरण पर अकचकाए गेलीह आ कृष्णकेँ सभ कथा कहि देलथिन्ह आ' राधा कृष्णसँ बदला लेथि एहि पर तुलि गेलीह। कृष्ण से गछि लेलथिन्ह।

कृष्ण एक दिन चुंगी-तहसीलदारक रूप धए वृन्दावन-मथुरा सड़क पर एक कदम्बक गाछतर अड्डा बनाए बैसि गेलाह आ' राधाक बाट ताकए लगलाह। बड़ायि ओ राधा-सहित गोपीलोकनि अपन-अपन वस्तु बेचबाक हेतु दूधक मटका माथ पर लेने मथुरा पहुँचलीह। कृष्ण हुनका लोकनिकेँ रोकि चुंगी माँगए लगलथिन्ह। बड़ायि कनेक अड़बाक अभिनय कयलन्हि। राधा तँ डटिकेँ विरोध करए लगलीह। बड़ी काल तक झगड़ा होइत रहल आ' एहि बीचमे आन गोपीलोकनि ससरि देलन्हि। राधा धमकी देलथिन्ह जे ओ कंसक ओतए सिकाइत करतीह जे कठोर शासक छथि। कृष्ण तकर परवाहि नहि कएलन्हि। तखन राधा हुनक सद्विवेकक दोहाइ दैत धर्मग्रन्थक वचन उद्धृत करए लगलीह। किन्तु कृष्ण किछु नहि सुनलन्हि; कहलथिन्ह जे ओ कानून आ धर्मसँ बाहर छथि। हतप्रयास आ' हतोत्साह भेलि राधा बूढ़ी दिस घुमलीह आ तीख स्वरमे हुनकापर बाजए लगलीह: "हिनकर बात अहाँ किएक सुनैत छिअन्हि आ' हिनकर दूती किएक बनैत छी? हमर सासु अहाँकेँ हमर रक्षा करए कहने छथीह। की अहाँक एहन आचरण ओकर अनुकूल अछि? कृष्ण गोआर थिकाह आ लंठ छथि। अहाँ किएक हुनका दिस कान दैत छिअन्हि? जँ अहाँ प्रेम करए चाहैत छी तँ किएक ने हुनका लग जाइत छी? यदि आबहुँ अहाँकेँ हमरा पर किछुओ ध्यान हो, तँ कृष्णक बात पर कान नहि दिअ। हमरालोकनि कात भए जाइ आ देखी।"

परन्तु एतबहिसँ राधा निश्चिन्त नहि भेलीह। कृष्ण बलप्रयोग करबा पर उद्यत छलाह। राधाकेँ बुझएलन्हि जे आब बँचबाक कोनो उपाय नहि। अतः आब हुनका एहि बातक चिन्ता भेलन्हि जे घरक लोककेँ एहि विलम्बक तथा उधसल केश ओ वस्त्रक की समाधान देबैक। ओ बड़ायिकेँ कहलथिन्ह: "अहाँ एखनहु हमरा एहि कुपथमे धकेलि रहलि छी, आ' हमरा एहि जालसँ बँचबाक कोनो बाट नहि भेटि रहल अछि। हमर स्वामीकेँ जखनहि ई बात ज्ञात होयतन्हि तखनहि ओ हमरा घरसँ निकालि

देताह। निश्चय, अहाँ तखन हुनके-लोकनिक पक्ष लेबन्हि आओर सभटा गंजन हमरा एकसरिए सुनए पड़त। आब हमरा बुझबामे आएल जे अहाँ किएक घोर वन बाला ई लगक बाट धरओलहुँ। अहाँ तँ गप्प पसारि लेब आ' टरि जाएब, मुदा हमर की हाल होएत? कृष्ण हमर सात छड़क हार छीनि लेताह। स्वामी घरहि छथि। हुनका केहन भावना होएतन्हि। ई बाट अहाँ किएक धएलहुँ? चलू, कोनो बहाना बनाए वा कृष्णकेँ ठकि-फुसिआए एतएसँ निकसि जाइ। जँ एहि बेर हिनकासँ उबरि कुशलपूर्वक घर पहुँचि गेलहुँ तँ फेर हम कहिओ मथुरा नहि आएब। हम परम संकट मे फँसि गेलि छी। आ' अहाँ हमर मातामही भए संग लए जाए रहलि छी। अहाँ जे सोचि-विचारि रहलि छी से परम लज्जाक बात थिक।"

कृष्ण भगल कए अन्यमनस्क भए गेलाह जे ओ दुनू गोटए, ई बुझि जे कृष्ण नहि देखैत छथि, पड़ाए जाए। हुनक आशय छलन्हि जे राधा अपन संरक्षिकासँ परोक्ष भए एकान्तमे पकड़ाए जाथि। हुनक ई आशय ओहि वृद्धाक सह पाबि तुरन्त सफल भए गेलन्हि। तथापि राधा किछु प्रतिरोध कएलन्हि, परन्तु अन्तमे एकरा दैवी विधान बूझि कृष्णक कामवासनाक वशीभूत भए गेलीह। ओ कृष्णकेँ कहलथिन्ह, "जखन-जखन हम मथुरा बजारमे गोरस बेचए जाइत छी तखन तखन अहाँ हमरापर नजरि गड़ओने हमर पाछु लागि जाइत छी। आब हम बूझि गेलहुँ जे हमरा भाग्यमे इएह लिखल अछि। हे नन्दनन्दन, हमरा कहिओ नहि छाड़ू; यदि अहाँ हमर इच्छाकेँ कहिओ नहि टारबाक वचन दी तँ हम संगमार्थ प्रस्तुत छी। कृष्ण, सावधान रहब जे हमर माँग-टीका नहि टूटए; हम पाएर पड़ैत छी, हमर सात छड़क हार ने टूटए, आ' आन गहना सभ गड़बड़ाए नहि। हमरा ठोरपर जोरसँ दाँत नहि गड़ाउ; जँ हमर घरबाला से देखि लेताह तँ हमरा मारिए देताह।" एकरा बादो राधा प्रतिरोध करैत रहलीह आ' कृष्ण जखन हुनक सभटा गहना छिनि लेलथिन्ह तखनहि ओ कृष्णक आगाँ पूर्णतः आत्मसमर्पण कएलन्हि। कृष्ण ई गहना सभ घुरओलथिन्ह नहि, सम्भवतः पुनः संगमक जमानतिक रूपमे राखि लेलथिन्ह।

जखन राधाकेँ ओ वृद्धा घर पहुँचओलथिन्ह, तखन अबेर भए गेल रहैक। हुनक सासुकेँ कहलथिन्ह जे बाटमे लुटिहारा सभ घेरि लेने

छलन्हि आ' ओ सभ राधाक सभ टा गहना लूटि लेलकन्हि। तकरा बादसँ राधाक सासु हुनका मथुरा जाएब बन्द कए देलन्हि।

ग्रीष्म ऋतु समाप्त भए गेल आ' बरिसात आबि तुलाएल। कृष्ण राधासँ दोसर बेर मिलि नहि सकलाह। ओ व्याकुल भए गेलाह। ओ बड़ायिक ओतए गेलाह आ हुनकासँ एहिमे सहायता करबाक अनुरोध कएलन्हि। ओ वृद्धा कोनो उपाय नहि कए सकलीह। ओ कृष्णकेँ कहलथिन्ह जे ओ कोनो अपने युक्ति लगावथु। कृष्ण कहलथिन्ह जे एहन कोनो उपाय करू जाहिसँ राधाक मथुरा बजार जएबाक दैनिक क्रम पुनः प्रारम्भ होइक। बड़ायि एहि विचारक समर्थन कएलन्हि आ' कहलथिन्ह, बरिसात आबि गेल अछि, तेँ राधाकेँ किछु दूर नाओसँ चलए कहबन्हि। एहि बीच कृष्ण एकटा अपन नाओ लए वृन्दावन ओ मथुराक बीच घटबाहि आरम्भ कए देथि। कृष्ण एहि विचारक स्वागत कएलन्हि, आ' तुरन्त एक नाओ प्राप्त कए घटबाहि आरम्भ कए देलन्हि। बड़ायि राधाक गुरुजनकेँ बुझाए-सुझाए सुविधापूर्वक राजी कए लेलन्हि। परन्तु राधा उपरक मनेँ कृष्णसँ पुनर्मिलनक अवसर हेतु बेसी उत्सुक नहि छलीह। जखन बूढ़ी आश्वासन देलथिन्ह जे बहुत दूर धरि नाओ पर जाएब, तेँ कोनो दुष्ट पुरुषसँ सामना होएबाक कोनो शंका नहि अछि, तखन राधा सहमति दए देलथिन्ह।

जखन बड़ायि आ' हुनक सखी-लोकनिक दल यमुनाक तट पर पहुँचल तँ ओतए एक टा नाओ तँ छलैक मुदा मलाहक कतहु पता नहि छल। किछु काल प्रतीक्षा कएलाक बाद बालिका-लोकनि जोरसँ मलाहकेँ सोर पाड़लन्हि, आ' तुरन्त कृष्ण अपन नाओपर उपस्थित भए गेलाह। मुदा नाओ बड़ छोट छलैक तेँ एक खेपमे सभकेँ लए जाएब सम्भव नहि छलैक। एक खेपमे दू-दू वा एक-एक गोटाकेँ पार करबाक छल। कृष्ण अपन बुधिआरीसँ बड़ायि तथा अन्य गोपी-लोकनिकेँ ओहि पार पहुँचाए देलथिन्ह आ' अन्तिम खेपक हेतु अपना संग राधाकेँ एकसरिए छोड़ि देलथिन्ह। कृष्ण अन्तिम खेपमे राधाकेँ नाओपर चढ़एबासँ पूर्व खेवा मँगलथिन्ह। राधा खेवा नहि दए सकैत छलीह वा नहि देअए चाहैत छलीह, तेँ कृष्ण ओकर बदला सुरत माङि बैसलाह। पूर्ववत् झगड़ा चलल आ' अन्तमे राधा अपन वाणिज्य-वस्तुक संग नाओपर चढ़लीह। जहाँ नाओ तटसँ किछु आगाँ

वज़ल की कृष्ण कोनो युक्ति लगाए नाओकेँ डुबाए देलन्हि। पानि बेसी नहि छलैक, तेँ नाओ पुनः ठीक भए गेल। मुदा एही बीचमे कृष्ण अपन मनोरथ पुराए लेलन्हि; राधा स्तब्ध रहि गेलीह। जखन दुनू गोटए ओहिपार पहुँचलाह तँ राधाकेँ अपन वेषभूषाक समाधान करबामे कोनो कठिनता नहि भेलन्हि (नाओ डूबब बा यौं बहाना छलन्हि)। गोरस जे नष्ट भेलन्हि तकर पूर्ति अन्य गोपीलोकनिसँ माङि-चाङिकेँ कए लेलन्हि। घुरबाक काल ओ सभटा गहना घुराए देलथिन्ह जे ओ पूर्वमे लए लेने रहथिन्ह। राधाक पतिकेँ एहि दुर्घटनापर दुःख भेलन्हि आ' जा' बरिसात खतम नहि भए गेल ता' हुनका मथुरा नहि जाए देलथिन्ह।

जखन बरिसात बीतल आ' शरत ऋतु आरम्भ भेल, कृष्ण पुनः राधाक हेतु व्यकुल भए उठलाह। कृष्णक कहलापर बड़ायि राधाक सासुक ओतए अइलीह आ' हुनका कहलथिन्ह जे आब राधा मथुरा जाए सकैत छथि, कारण जे नदी-तटक बाटमे कोनो खतरा नहि छैक। ओ मानि लेलथिन्ह आ' राधाक पुनः मथुरा जाएब स्वीकार कए लेलथिन्ह। एहिबेर कृष्ण भरबाह (कुली) बनिकेँ उपस्थित भेलाह। प्रचंड रौदमे माथपर भार उठओने जाइत-जाइत राधा शीघ्रे थाकि गेलीह। ओ कुली कए लेलन्हि किन्तु भाड़ा तए नहि कएलन्हि। कृष्ण हुनक भार उठाए मथुरा पहुँचाए देलथिन्ह आ' ओतए गोरस बिकाए गेल; भाड़ाक तरेँ ओ राधासँ सुरत मँगलन्हि, किन्तु राधा सहमत नहि भेलीह।

ओलोकनि वृन्दावन घुरि अइलीह आ' कृष्ण भरि बाट राधाक उपर छाता धएने अएलाह (जानि नहि जे एहि द्विगुण कर्तव्यक पारिश्रमिक अन्ततः कोन रूपमे चुकाओल गेल, कारण जे हस्तलेखमे एतए आठ पात त्रुटित अछि)।

ततःपर कृष्ण मालि बनि गेलाह। ओ सड़कक कातमे एकटा सुन्दर उद्यान लगओलन्हि। बड़ायि राधा-सहित गोपी-लोकनिकेँ बहटारिकेँ उद्यान देखाबए अनलन्हि। कृष्ण हुनकालोकनिसँ भद्रतापूर्ण व्यवहार कएलन्हि, किन्तु अन्तमे राधाकेँ अपन सखी-लोकनिसँ दूर लए गेलाह आ' हुनकासँ सुरत-रसक याचना कएलन्हि। राधा अनिच्छु नहि छलीह।

अगाँक लीला-स्थल यमुना बनैत अछि। ओतए उपयुक्त स्थानमे एक

गँहीर सरोवर छल, किन्तु ओहिमे एक विषधर साँप रहैत छल, तेँ ओकर उपयोग मनुष्य वा पशु नहि कए सकैत छल। कृष्ण ओहि साँपकेँ बैलाए ओकरा व्यवहार-योग्य बनाए देलन्हि। कृष्ण, राधा ओ अन्यान्य गोपी-लोकनि अनेक दिन धरि ओहिमे चुभकैत ओ केलि करैत रहलीह। एक दिन ओहि सरोवरमे राधाक हार खसि पड़लन्हि आ हुनका भेलन्हि जे कृष्ण चोराए लेलन्हि अछि। ओ बड़ायिकेँ पठाए हुनकासँ निवेदन कएलन्हि जे हार घुराए देथि। किन्तु कृष्ण कहलथिन्ह जे "हम तँ किछु नहि जनैत छी।" तखन राधा कृष्णक माता यशोदाक ओतए गेलीह आ' कृष्णक एहि दुर्व्यवहारक उपराग देलथिन्ह। यशोदा अपना बेटाकेँ सजाए देलन्हि। कृष्ण निश्चय कएलन्हि जे राधासँ एकर बदला लेल जाए।

कृष्ण जादूवाला फूलक धनुषबाण हाथमे लए मथुरा जएबाक बाटक कातमे एकटा कदम्बक गाछतर ठाढ़ भए गेलाह। जखन राधा बड़ायिक संग ओतए अइलीह तखन कृष्ण कहलथिन्ह, "अहाँ जे माइक समक्ष हमरा पर मिथ्या दोषारोपण कएलहुँ अछि, तदर्थ क्षमा-प्रार्थना करू।" परन्तु ओ तखनहुँ लड़बा लेल तैयार छलीह आ' हुनक बात नहि सुनलथिन्ह। कृष्ण क्रुद्ध भए उठलाह आ' ओ पुष्पबाण राधा पर चलाय देलन्हि। बाण लगितहि राधा अभिभूत भए गेलीह आ बेहोश भए भूमि पर खसि पड़लीह। कृष्ण ई नहि सोचैत छलाह जे पुष्पबाणक एहन प्रभाव होएतैक आ' ओ घबराए गेलाह। बड़ायि तमसइलीह आ' कृष्णकेँ बिना अपराधहि एक बालिकाक वध कएनिहार मानिकेँ हुनका कसिकेँ पकड़लन्हि। कृष्ण कानूनक अनुसार सजाए पएबासँ ओतेक भीत नहि भेलाह जतेक भीत एक बूढ़ि स्त्रीक हाथसँ छूटि नहि पएबाक उपहाससँ भेल छलाह। ओ नम्र भए बड़ायिसँ अनुनय-विनय करए लगलाह, "हमरा छोड़ि दिअ, हम एहि गोपीक मूर्छा छोड़एबाक तथा हुनका होसमे अनबाक प्रयास करब।" बड़ायि हुनका छोड़ि देलथिन्ह। कृष्ण राधाक लग आबि विलाप करए लगलाह :—

"हम तँ ई पुष्पबाण केवल ओहि वृद्धाक परामर्शसँ चलाओल जे हमरा दुनूक दूतीक कार्य करैत अछि। किन्तु ओ वध किएक करओलक आ' हमरा वधभागी किएक बनओलक ? अहाँ माए लग हमर सिकाइत कएलहुँ, परन्तु से सभ बात आब बिसरि जाउ। राधा, अहाँ पुनः जीबि उठू। अहाँ एना मृतसदृश निद्रामे किएक छी ? हे अबोध बालिका, हमर

बाउ सूनु, उठू, हमरा ढाढ़स दिअ, हे प्राणप्रिय राधे। सुनू हमर कथा। हम नेहोरा करैत छी, अहाँ उठि बैसू। अहाँक सभ दातव्य कर माफ कए देब आ' वचन दैत छी जे आब अहाँके कोनो कालमे नहि सताएब। उठू, बजारमे बेचबाक हेतु विक्रय-वस्तु लए चलू मथुरा।"

कृष्ण हुनका मुह पर यमुनाक शीतल जल छीटि देलन्हि। ओ होश मे आबि गेलीह। तखन एक घोंट जल पिआए देलथिन्ह। जखन राधा पूर्ण प्रकृतिस्थ भए गेलीह, तखन ओ चुपचाप घसकि गेलाह।

ई जादूक बाण राधाकेँ प्रेमाभिभूत बनाए देलकन्हि। ओ कृष्णक बिना छनो भरि रहि नहि सकैत छलीह। ओ हुनक पाछु विदा भेलीह। तकैत-तकैत ओही उद्यानमे कृष्ण भेटलथिन्ह। दुनूमे मिलन भेल।

कृष्ण राधाकेँ वचन देने रहथिन जे ओ कतहु लोकक समक्ष हुनका कोनो उकठ नहि करथिन्ह। आ' ओ एहि वचनक पालन करैत रहलाह। परन्तु कृष्ण चित्तकेँ व्याकुल नहि करबाक वचन तँ नहि देने छलथिन्ह तेँ अपन घरहिमे राधाकेँ व्याकुल करबासँ ओ बाज नहि अएलाह। ओ एकटा सुन्दर स्वरवाला बँसुरी बनओलन्हि आ' ओकरा अपने इच्छेँ जखन-तखन टेरए लगलाह। बँसुरीक मर्मवेधी ओ पसरल ध्वनि अपन घरमे आबद्ध राधाक कान धरि पहुँचिए गेल, आ' ओ एहिसँ विक्षुब्ध भए उठलीह। अन्तमे ओ बड़ायिकेँ कहलथिन्ह :

के ना बाँशी बाए बड़ायि कालिनी नइ कूले।
के ना बाँशी बाए बड़ायि ए गोठे गोकुले॥

आकुल शरीर मोर बेआकुल मन।
बाँशीर शबदे मो आऊलाइलों रान्धन॥

के ना बाँशी बाए बड़ायि से ना कोन जना।
दासी हआँ तार पाए निशिबों आपना॥

के ना बाँशी बाए वड़ायि चित्तेर हरिषे ।
तार पाए वड़ायि मों केलों कोण दोषे ।।

आझर झरए मोर नयनेर पाणी ।
बाँशीर शबद बड़ायि हारायिलों पराणी ।।

आकुल करिते किबा अम्हार मन ।
बाजाए सुसर बाँशी नान्देर नन्दन ।।

पाखि नहों तार ठाहूँ उड़ि पड़ि जाओं ।
मेदिनी बिदार देउ पसिआँ लुकाओं ।।

बन पोड़े आग बड़ायि जगजने जानी ।
मोर मन पोड़े येन्ह कुम्भारेर पणी ।।

आन्तर सुखाए मोर कान्ह अभिलासे ।
बासिल शिरे बन्दि गाइल चण्डीदासे ।।

राधा वड़ायिकें कहलथिन्ह जे कृष्णसँ मिलन कराए दिअ । वड़ायि उत्तर देलथिन, "से हमर एक नहि अछि । अहाँ पर-पुरुषसँ प्रेम नहि करू । किन्तु राधा सान्त्वनायोग्य नहि छलीह; ओ स्वयं विदा भए गेलीह । अतः बाध्य भए कृष्णकें तकवालए वृढ़िअहुकें संग होवए पड़लन्हि । किन्तु दुनू विफल भए गेलीह ।

रातिमे राधाकें निद्रा नहि भेलन्हि, कारण जे कृष्ण जखन-तखन वँसुरी वजाए देथि । जखन वूढ़ी भिनसर उठलीह तँ राधाकें मृतप्राय पड़लि पओलन्हि । ओ राधाक मुहपर ठंढा पानि छिटलन्हि आ' राधा तुरन्त प्रकृतिस्थ भए गेलीह ।

वड़ायि तखनसँ राधाक हेतु वस्तुतः चिन्तामे पड़लीह आ' निश्चय कएलन्हि जे राधाकें सतएबाक वदला कृष्णसँ लेल जाए । ओ कृष्णपर जादू-टोना कएलन्हि । कृष्ण कदम्बवृक्षक तर ठामहि निद्रित भए गेलाह आ वँसुरी हुनक कातमे खसि पड़ल । राधा वँसुरी उठाए लेलन्हि आ अपन माथपरक घैलमे राखि लेलन्हि । जखन कृष्णकें होस भेलन्हि, देखथि तँ वँसुरीक पता नहि । परन्तु थोड़वे कालमे हुनका बुझवामे आवि गेलन्हि जे एहि चोरिक रहस्य राधा बुझैत छथि । पुछलापर राधा

अपलाप कए गेलीह, किन्तु कृष्ण कहितहि रहलथिन्ह आ' बहुत तरहेँ अनुनय-विनय कएलथिन्ह। अन्तमे ई समझौता भेल जे कृष्णकेँ बँसुरी घुराए देल जएतन्हि यदि ओ नम्रता देखाबथि आ' बड़ायिकेँ वचन देथि जे ओ राधाक प्रतिकूल कोनो आचरण नहि करताह। कृष्ण मानि लेलन्हि बड़ायि राधाकेँ अपना आँगन पहुँचाए देलन्हि।

मासपर मास बितैत गेल, कृष्ण राधाक समक्ष नहि अएलाह। वसन्त ऋतु आरम्भ भेल। राधा अधीर भए उठलीह। ओ बड़ायिसँ बारंबार अनुनय करए लगलीह जे जाएकेँ कृष्णक पता लगाए हुनका आनि देथि। बड़ायि बारंबार अपन अक्षमता प्रगट करैत रहलीह। कहलथिन्ह, "हम बड़ बूढ़ि भए गेलहुँ, एतेक दूर आ' अनभुआर जगहमे कोना बौआएब; जानि नहि कृष्ण कतए गेलाह।" राधा कृष्णकेँ जोहि अनबाक पुरस्कारमे हुनका सोन गछलथिन्ह। राधा वृन्दावनमे एवं ओकर चारू कात जतए कृष्णकेँ भेटबाक वा नहिओ भेटबाक सम्भावना छलन्हि एवं किछु दूरो स्थान सभक निर्देश कएलथिन्ह।[1]

'यदि ओ उक्त कोनहु स्थानमे नहि भेटथि तँ अहाँ गंगाक कातमे हुनका तकबन्हि। यदि ओतए नहि भेटथि तँ सागर-गृह जाएब आ' ओतए गोप-सागरकेँ (अथवा समुद्रतटक बथानमे) पुछबन्हि। यदि कृष्ण ओतहु नहि भेटथि तँ प्रत्येक बाट-बटोहीकेँ पुछबैक। आ' तखन अहाँकेँ अवश्य पता लागि जाएत जे ओ जगतक प्रभु (अथवा जगन्नाथ) कतए छथि'।[2]

---

१. निम्नलिखित पंक्ति सबसँ स्पष्टतः ई ध्वनित होइत अछि जे ग्रन्थकार (कम-सँ-कम एहि पंक्ति सभक लेखक) चैतन्यमे कृष्णक तादात्म्य लक्षित कएने छथि। 'भागीरथीकूले' 'सागरेर' तथा 'जगन्नाथ' पद अवश्य किछु ध्वनित करबाक हेतु आएल अछि। चैतन्यक जन्म गंगातट पर नदिआमे भेल छलन्हि ओ पुरीमे समुद्रक कात एक उद्यान-भवनमे रहैत छलाह जतए हुनका सभ लोक जनैत छलन्हि। कहल जाइत अछि जे मुइलापर ओ ओही ठामक जगन्नाथ-प्रतिमामे समाए गेलाह। एहिसँ निष्कर्ष बहराइत अछि जे ई ग्रन्थ १५३४ ई०सँ पूर्वक रचना नहि भए सकैत अछि।

२. मूल पंक्ति एहि प्रकारेँ अछि (अनुवादक)—

तथाँहोँ चाहिआँ यबेँ ना पाह गोपाले।

बड़ायि उत्तर देलथिन्ह जे ओ एतेक दूर नहि जाए सकैत छथि। राधा कहलथिन्ह जे कम-सँ-कम मथुरा जाउ, ओतए ओ अवश्य भेटि जएताह। पूर्वमे जे राधा कृष्णक प्रति दुर्व्यवहार कएने छलीह ताहि हेतु बड़ायि राधाक गंजन करए लगलीह, परन्तु राधा केवल अपन वर्तमान व्यथाक गप्प कहैत रहलीह। बड़ायि राधाक हठ टारि नहि सकलीह आ' हुनका संग लए रसिकराजक अन्वेषणमे बिदा भए गेलीह। ओ दूनू गोटए कृष्णक परम प्रिय मनोविनोदन-स्थल कदम्ब-वृक्ष लग गेलीह आ' ओतए धैर्यपूर्वक हुनक बाट ताकए लगलीह।

दिन बीतल आ' राति आबि तुलाएल। राधा तथापि नोर बहबैत, प्रतीक्षा करैत अतीत घटना सभक प्रसंग बड़ायिक संग गप्प करैत ओ वर्तमान स्थितिपर विलाप करैत रहलीह। एवं प्रकारेँ राति बीतल आ भोर भेल। तखन बड़ायि हुनका वृन्दावन लए गेलथिन्ह आ' ततए कृष्ण गाए चरबैत भेटि गेलथिन्ह। देखैत देरी बेचारी राधा अचेत भए गेलीह किन्तु बड़ायि होस करओलथिन्ह। राधा विनम्र भए अपन पूर्वक अपराध पर अनुताप करए लगलीह किन्तु कृष्ण कान नहि दए उपेक्षा-भरल वचन कहए लगलाह। राधा बेरि-बेरि विनती करैत रहलीह, "अपना लग कनेक बैसहु धरि दिअ।" कृष्ण कहलथिन्ह, "लग नहि आउ, लोक निन्दा करत। जतए छी ततहिसँ हमर कथा सुनू। हम निश्चित रूपेँ जनैत छी, दुर्दिन आबि गेल अछि : अहाँ आब भागिनक संग व्यभिचार करबाक बात नहि सोचू।" राधा कहलथिन्ह, "केवल एक बेर हमरा दिस ताकू। केवल एक बेर हमरासँ संगम कए हमर प्राणरक्षा करू।"

तबेँसि चाइह गिआँ भागीरथी-कूले ॥
तथाँहोँ ना पाइलेँ चाइह सागरेर घरे।
सागर गोआले बात पूछिह सत्वरे ॥
तथा गेलेँ जबेँ बड़ायि ना पाह कान्हे।
तबेँस पूछिह बड़ायि सब जन थाने ॥
तबेँ सुधि पाइबेँ यथाँ बसे जगन्नाथे।
आदि अन्त कथा सब कहिल तोम्हाते ॥

कृष्ण उत्तर देलथिन्ह, "आब हम योगी भए गेलहुँ। दिन-राति योगमे लीन रहैत छी, आ' योगबले चित्त ओ प्राणकें अविचल कएने छी। हम कमलक मूलाधारसँ मधुपान करैत छी। आ' ताही बले हम आब ब्रह्मज्ञानी भए गेलहुँ अछि। हे मोहिनी राधा, अहाँ चलि जाउ। अहाँ व्यर्थ प्रेम कए रहलि छी। हम इड़ा, पिंगला आ सुषुम्ना तीनू नाड़ीक संयोग कराए चुकल छी, तथा चित्त आ श्वास नीकजेकाँ स्थिर कएने छी। दशम द्वार पूर्णतः बन्द कए देल। आब योगमार्ग धएलहुँ। कामबाणकें यथार्थ ज्ञानक बाण परास्त कए देलक आ' तें आब अहाँक यौवनसँ भरल देहक मोहसँ हम दूर भए गेल छी। हम अस्थि-मांसक आकर्षणसँ मुक्त छी। हमरा हेतु सकल सांसारिक वस्तु निरर्थक।"

एहि तरहें मर्मभेदी वचन कहि कृष्ण योगीक मुद्रामे शान्त भए बैसि गेलाह। राधा कहलथिन्ह, "हे कृष्ण, जखन अहाँ योगी भए गेलहुँ तखन हमहुँ घर छाड़ि योगिनी बनि जाएब आ' सहचरी परिचारिका जेकाँ अहाँक सेवा करैत रहब।" कृष्ण राधाक एहि बातक उत्तर नहि दए सकलाह आ' बजलाह जे "हम साधारण योगी नहि, अवतार थिकहुँ।" राधा कृष्णक एहि दावी पर किछु बजलीह नहि, प्रत्युत पूर्ववत् अनुनय करैत रहि गेलीह जे केवल एको बेर प्रीति करू। कृष्ण अस्वीकार कए देलन्हि आ' पूर्वक अपराध स्मरण करावए लगलथिन्ह। तखन राधा बजलीह, "यदि अहाँ हमरासँ सम्प्रति प्रीति नहि करब तँ हम प्राणत्याग कए देब आ' अहाँकें वधभागी बनाएब।" से सुनि कृष्ण कनेक अनुकूल होइत कहलथिन्ह, "बेस, हम तैयार छी, जँ बड़ायि अनुमति देथि।" तकरा बाद दुनू गोटामे आओर गप्प होइत रहल। अन्तमे वृद्धा हस्तक्षेप कएलन्हि। पहिने तँ बड़ायि राधाक पक्ष नहि लेलन्हि, किन्तु अन्तमे बाध्य भए से करए पड़लन्हि। जखन राधा बड़ायिकें अपन पक्षसँ बजबाक हेतु तैआर कएलन्हि, कृष्ण अकस्मात् अलक्षित भए गेलाह। पुनः दुनू जनी कृष्णकें जोहए चललीह। जोहैत-जोहैत थाकि गेलीह, तखन नारद ऋषिक लग पहुँचलीह। हुनका कृष्णक उदेस पुछलथिन्ह। नारद बैसलाह, समाधि लगओलन्हि, कहलथिन्ह जे कृष्ण वृन्दावनक गहन जंगलमे कदम्बक तरुतर कुसुम-शय्यापर पड़ल छथि।

ओ दुनू गोटए सोझे ओहि स्थानपर पहुँचलीह। दूरहिसँ कृष्णकें

देखलन्हि । थाकलि-ठेहिआइलि राधा देखितहिँ बेहोस भए गेलीह । होसमे अएलापर ओ बड़ायि द्वारा कृष्णकेँ संवाद पठओलथिन्ह जे हमर दशा देखथु आ' जे उचित बूझि पड़न्हि से करथु । बड़ायि कृष्णक निकट अइलीह आ' कृष्णकेँ राधाक विरहावस्था 'गीत-गोविन्द'क दुइ गीतक अनुवाद रूपमे सुनओलन्हि : **स्तनविनिहितमपि हारम्,** तथा **निन्दति चन्दनमिन्दुकिरणमनु-विन्दति खेदमधीरम्** । कृष्ण ध्यानपूर्वक सुनलन्हि आ' बिहुँसिकेँ कहलथिन्ह, "राधा अवसरानुरूप सज्जिता भए हमरा लग आवथु, हम हुनका निकेँ कए देबन्हि ।"

जेना कहलथिन्ह तहिना राधा कृष्णक निकट अइलीह । हुनक दशा देखि कृष्ण दयासँ द्रवित भए गेलाह । दुनूक मिलन भेल आ' दुनू सभ किछु विसरि देलन्हि । श्रान्त-क्लान्त राधा सुखाएल खढ़-पातक सेजपर लेटि गेलीह आ' अपन माथ कृष्णक कोरपर राखि देलन्हि । ओ श्रान्तिवश सद्यः निद्रामग्न भए गेलीह । एहि बीचमे बड़ायि किछु दूर हटलि छलीह किन्तु पूर्णतः परोक्ष नहि छलीह । कृष्णक संकेत पाबि ओ निकट अइलीह आ' कृष्ण कहलथिन्ह, "अहाँ जेना-जेना कहलहुँ तेना-तेना हम कएलहुँ । आब हमरा बिदा करू । साँझ पड़ल जाए रहल अछि । आब अहाँ बनसँ बहराए जाउ । हम जे वचन देने छलहुँ से पुरओलहुँ । आब अहाँ हमर अनुरोध स्वीकार करू । हम वृन्दावनसँ जाए रहल छी । अहाँ राधाकेँ देखबन्हि ।" एतबा कहि कृष्ण सूतलि राधाक मूड़ी अपना कोरसँ कलचल उतारि देलन्हि आ' मथुरा बिदा भए गेलाह ।

राधा जगलीह आ' कृष्णकेँ अपना लग नहि देखि क्रन्दन करए लगलीह । ओ वृद्धासँ नेहोरा करए लगलीह जे कृष्णकेँ ताकि आनि दिअ । बड़ायि कहलथिन्ह, "आब बड़ अबेर भए गेल, अन्हार भेल अबैत अछि, चलू घर जल्दी । कृष्णसँ मिलन भइए गेल अछि । परात ओ आबिकेँ अवश्य भेँट करताह ।" कोनहु-ना बुझाए-सुझाएकेँ बड़ायि राधाकेँ अपना घर पहुँचओलन्हि ।

दिनपर दिन बितैत गेल, कृष्ण राधाक ओतए नहि अएलाह । ग्रीष्म ऋतु बितल आ' पाबस आरम्भ भए गेल । राधा बड़ायिसँ नेहोरा करए लगलीह जे ओहि निष्ठुर प्रेमीकेँ खोजि आनि दिअ । ओ विलाप

करए लगलीह :—

फुटिल कदम्ब फूल भरे नोआइल डाल ।
एभो गोकुलक नाइल बाल गोपाल ।।
कत ना राखिब कुच नेते ओहाड़िआँ ।
निदय हृदय कान्ह ना गेल बोलाइयाँ ।।
शैशवेर नेहा बड़ायि केना बिहड़ाइल ।
प्राणनाथ कान्हमोर ।एमो घर नाइल ।। ध्रु ।।
मुछिआँ पेलायिबो बड़ायि शिषेर सिन्दूर ।
बाहुर बलया मो करिबो शंखचूर ।।
कान्ह बिणी सब खिन पोड़ए पराणी ।
बिषाइल काण्डेर घाए येहेन हरिणी ।।
पुनमती सब गोआलिनी आछे सुखे ।
कोन दोषे बिधि मोक दिल एत दुखे ।।
अहोनिशि कान्हाञिर गुण सोंअरिआँ ।
बजरे गढ़िल बुक ना जाए फुटिआँ ।।
जेठ मास गेल आसाढ़ परवेश ।
सामल मेघे छाइल दक्षिण प्रदेश ।।
एमो नाइल निठर से नान्देर नंदन ।
गाइल बडु चण्डीदास बसुलीगण ।।

बड़ायि राधाकेँ बुझओलथिन्ह जे "चारि मास आओर धैर्य धरू, कारण जे चतुर्मास्यामे यात्रा करब कठिन होइत छैक।" राधा कहलथिन्ह जे कृष्णकेँ एकहु बेर बिनु देखने एतेक दिन जिअब असम्भव अछि। ओ गजलीह :—

भादर मासे अहोनिशी आन्धकारे ।
शिखि भेक डाहुक करे कोलाहले ।।

तात ना देखिबो यब कान्हाञिर मुख ।
चिन्तिते चिन्तिते मोर फुटे जाइबे बुक ।।

आशिन मासेर शेषे निविडे बारिषी ।
मेघ बहिया गेले फुटिबेक काशी ।।

तबे कान्ह बिणी हैब निफल जीवन ।
गाइल बड़ु चण्डीदास बासलीगण ।।

तखन राधा बड़ायिसँ अनुरोध कएलन्हि जे ओ मथुरा जाथु जतए सम्भवतः कृष्ण होएताह। हुनका अपना हाथक औंठी सेहो देलथिन्ह (ई पक्का संवादक प्रतीक सेहो छल ओ वृद्धाक पुरस्कार सेहो)। जेना-तेना बड़ायि हुनक अनुरोध मानि लेलथिन्ह।

बड़ायि मथुरा अइलीह। कृष्णसँ भेंट भेलन्हि ओ कहलथिन्ह, "आब हमरा राधासँ प्रेम नहि अछि। आओर बात नहि बढ़ाए अहाँ सोझे घुरि जाउ।" बड़ायिकेँ कृष्णक ई रुखि नहि सोहएलन्हि आ' कहलथिन्ह, "अहाँक व्यवहार हमरा बुझबामे नहि अबैत अछि। अहाँ विनु मङ्गनहि स्वतः समागत अमृतक उपेक्षा कए रहल छी। ओ बेचारी आब कहिओ अहाँक विरुद्ध कोनो कार्य नहि करतीह। हमरा पर विश्वास कए हुनका लग चलू। जँ अहाँ जेना हम कहैत छी तेना नहि करब तँ निश्चय पाछाँ पछताएब। एक समय एहन छल जखन अहाँक हेतु नीको भोजन धनसन, मुदा आब अकटो-मिसिआ पएबा ले वेहाल रहैत छी। सोनाक पात्र टुटला पर सहजहि जोड़ल जाए सकैत अछि आ' तेहने होइत अछि सुपुरुषक सिनेह। कुपुरुष अविश्वसनीय होइत अछि ओ ओकर प्रेम माटिक भाँड़ सन होइत अछि। ओम्हर राधा छथि अपना घरमे आ' अहाँ छी मथुरामे, अहाँक दुनूक बीचमे हम एहि बुढ़ारी बएसमे कष्ट सहैत नूड़ि तनैत छी।"

ई सुनि कृष्ण द्रवित तँ भेलाह, मुदा हुनक रुखिमे कोनो परिवर्तन नहि भेलन्हि। ओ अपन निर्णय दोहराए देलथिन्ह। राधाक संग पुनर्मिलन असम्भव अछि, कारण जे राधाक कठोर शब्दसभ ओकरा बहुत दिन भइयो गेलापर कृष्णक हृदयकेँ दुःख दैत छल। ओ गोकुल सर्वदाक हेतु छोड़ि देलन्हि आ' कंसकेँ भगएबामे लगलाह।

हस्तलेख एतहि समाप्त अछि, कृष्णक शेष उक्ति तथा आगाँक बात जे अगिला पातमे वा पातसभमे आएल होएत, लुप्त भए गेल अछि। परन्तु अपन पितिआ ससुर चन्द्रशेखरक घरमे चैतन्य जे सद्यः प्रस्तुत नाटक प्रदर्शित करओने छलाह (देखू 'चैतन्य-भागवत') ओहिसँ एहि 'श्रीकृष्ण-कीर्तन'क कथासार बोधगम्य भए जाइत अछि।

७. श्रीकृष्णकीर्तनसँ उद्भूत समस्यापर पुनर्विचार

'श्रीकृष्णकीर्तन'मे जे ग्राम्य प्रेमक बहि:स्वर आ वास्तविक अनुरागक अन्त:स्वर, यत्र-तत्र अश्लीलताक संग, मुखरित भेल अछि से प्राचीन वंगलाक अन्य कोनहु काव्यमे नहि देखल जाइत अछि। कृष्णोपाख्यानक एहि विशेषताकेँ विद्वान्-लोकनि एकर प्राचीनताक प्रबल प्रमाण मानैत छथि। परन्तु से किएक? जयदेवक गीत तँ कतहु ग्राम्यताक निकट नहि अछि तथा भवानन्दक हरिवंश, जे राधा तथा अन्यान्य गोपीलोकनिक संग कृष्णक प्रेम पर लिखल गेल अपर कथा-काव्य थिक, एहि विषयमे 'श्रीकृष्णकीर्तन'सँ बढ़ल-चढ़ल अछि। जयदेव बारहम शताब्दीक थिकाह, ओ भवानन्दक एहि कृतिक काल सतरहम शताब्दीक पूर्वार्द्धसँ पहिने कथमपि नहि राखल जाए सकैत अछि। परन्तु कहिओ-ने-कहिओ संस्कृत, वंगला वा अवहट्ठमे कोनो एहन ग्रन्थ छल होएत जाहिमे, संक्षेपमे वा विस्तारपूर्वक, गोपाल रूपमे अवतीर्ण ईश्वरक प्रणयलीला वर्णित छल। सोलहम ओ सतरहम शताब्दीक अनेक विद्वान् जे एहि विषयपर लिखलन्हि ओहि ग्रन्थक निर्देश कएने छथि, आ' भवानन्दक काव्यमे तँ एकर स्पष्ट उल्लेख अछि। आ' एकर नाम भवानन्दक काव्य कए देल गेल अछि (परन्तु खूब सम्भव जे हरिवंश नामसँ एहि ग्रन्थक उल्लेख कएनिहार ई ग्रन्थ कहिओ देखने नहि छल होएताह)। भवानन्द पूर्वोत्तर वंगालक छलाह ओ हुनक कृति, जाहिमे 'श्रीकृष्णकीर्तन' जेकाँ गेय पद अछि किन्तु संस्कृत पद्य द्वारा कथासूत्र जोड़ल नहि अछि, सिलहट ओ चटगामक मुसलमान-लोकनि मध्य बड़ प्रिय छल। 'श्रीकृष्ण-कीर्तन'क ई हस्तलेख पाओल तँ गेल छल दक्षिण-पश्चिम वंगालक छोरपर वाँकुड़ा जिलाक केन्द्रस्थलमे, किन्तु ई लिखल कतए गेल से जानि नहि। पूर्वमे कहिए चुकल छी जे एहि हस्तलेखक पार्श्वमे किछु चढ़ाओल छैक जाहिमे तीन मुसलमानक हस्ताक्षर अछि तथा एक पंक्ति फारसीमे लिखल छैक जे पढ़ल नहि जाइत अछि। एहिसँ सिद्ध होइत अछि जे कहिओ ई हस्तलेख मुसलमानलोकनिक अधिकारमे छलन्हि।

'श्रीकृष्णकीर्तन'क लिपि वा भाषामे एहन कोनो तत्व नहि अछि जाहिसँ निश्चयपूर्वक कहि सकी जे ई अमुक क्षेत्रमे रचल गेल। लिपिमे कोनो

स्थानीय वैलक्षण्य नहि अछि; हँ, एतबा धरि देखैत छी जे एकर 'र' त्रिभुजक नीचाँ बिन्दु दए नहि, अपितु सर्वत्र त्रिभुजकेँ पेट काटि लिखल गेल अछि, जे आसामी तथा बंगालक उत्तर ओ पूब भागक लिपिक विशेषता थिक। भाषामे आसामीसँ किछु स्फुट साम्य अछि, किन्तु ताहिसँ कतोक अधिक साम्य ओड़िआसँ अछि।

प्रथमतः 'श्रीकृष्णकीर्तन'क भाषाक व्याकरणपर दृष्टि देलासँ पाठककेँ एहन सन धारणा होएतन्हि जे एकर भाषा कतोक चर्या-गीत सभकेँ छाड़ि बंगलाक अन्य ज्ञात ग्रन्थ सभक भाषासँ अधिक प्राचीन अछि। परन्तु तथापि यदि ध्वनितत्व ओ रूपतत्वक सभ वैलक्षण्यपर सम्मिलित दृष्टि दैत छी तँ एकरा प्राचीन कालक मानब कठिन लगैत अछि। एकर भाषा ओ शब्द-भण्डार दुनूमे परवर्तिता ओ आधुनिकताक स्पष्ट छाप अछि। एहिमे अनेकानेक शब्द अरबी ओ फारसीक अछि जाहिमे एक-दू शब्द फारसी ओ आर्यभारतीय मिश्र मूलक सेहो अछि। वर्णविन्यास प्राचीन शैलीक अछि, किन्तु एहिमे निश्चित रूपेण परकालीन उच्चारणक समावेश नहि अछि। एहिमे एहन कतेको रूप अछि जाहिमे स्वर-संगति लक्षित होइत अछि, आ' ई लक्षण सतरहम शताब्दीक अन्त वा अठारहम शताब्दीक आरम्भसँ पूर्व दृष्टिगत नहि होइत अछि।

तेसर कठिनता तखन लक्षित होइत अछि जखन बंगला छन्दक प्रतिप्रेक्ष मे संस्कृत श्लोक सभपर विचार करैत छी। संस्कृत श्लोकसभमे कथाक प्रगति-रेखा खीचल गेल अछि आ' बंगला पद-सभ ओहिमे रंग भरैत अछि। कतोक श्लोक उत्कृष्ट कोटिक अछि ओ एकर रचयिता निम्नकोटिक कवि नहि छलाह। एहि काव्यक पूर्वमे जे स्वरूप छल होएत ताहिमे प्रतीत होइत अछि जे गीतक बीच-बीचमे योजक रूपमे संस्कृत श्लोक सभ छल होएत। ई सम्भवतः गीतगोविन्दक विकसित ढाँचामे बान्हल छल; भेद एतबे जे एहिमे गीत संस्कृतमे नहि अछि। एहि दृष्टिएँ देखलासँ 'श्रीकृष्ण-कीर्तन'मे, जाहि रूपमे ई सम्प्रति उपलब्ध अछि, बहुत अंश लुप्त ओ परिवर्तित भए गेल अछि तथा भारी मात्रामे प्रक्षिप्त पाठ आबि गेल अछि।

कतहु-कतहु समर्थक गीत (वा गीत-सभ) लुप्त अछि; उदाहरणार्थ, प्रथम खंड (जन्मखण्ड)क अन्तिम दू श्लोककेँ लिअ, जकर सम्पुष्टिमे कम-

सँ-कन दू गोट गीत होएबाक चाही। सभसँ अधिक रसगर दानखण्ड बहुत अधिक नमड़ाए तँ देल गेल अछि संगहि कनेक-मनेक अन्तरबाला कम-सँ-कम दू पाठ चढ़ाए देल गेल अछि। ई चढ़ाओल पाठ कदाचिते झँपाएल अछि आ' अनेक विसंगति सेहो दृष्टिगत होइत अछि। यथा अन्तिम खंड (राधा-विरह) मे पहिने कहल गेल अछि जे जखन राधा कृष्णक कोरपर माथ दए सूतलि छलीह तखन कृष्ण बड़ायिक निकट गेलाह,[1] जे ओतएसँ किछु दूरमे छलीह, आ' हुनका अपन अभिप्राय सुनओलथिन्ह; ओ जखन सभ बात कहल भए गेलन्हि तखन राधाक माथ अपन कोरसँ कलबल हटाए ओतएसँ मथुरा विदा भए गेलाह।[2]

काव्यमे जे खण्ड-विभाजन कएल गेल अछि से नहि लगैत अछि जे मूलतः एना कएल गेल होएत। यथाकथंचित् एहिमे किछु व्यत्यास ओ क्रमान्तरण अवश्य भेलैक अछि जाहिसँ प्रकट होइत अछि जे बादमे एकर अकुशल सम्पादन भेल अछि। उदाहरणार्थ, जे मूलतः यमुना-खण्ड छल से बादमे पृथक्-पृथक् तीन खण्डमे विभक्त कए देल गेल—कालिय-दमन, यमुना ओ हार। सम्पूर्ण वृन्दावन-खण्ड परिवर्तन-परिवर्धनसँ भरल अछि जे परिवर्ती कालक अनाड़ीक काज बूझि पड़ैत अछि।

चारिम कठिनता अछि कविक भनिता लएकेँ जे प्रत्येक गीतक अन्त मे आएल अछि। कविक नाम की तँ 'चण्डीदास' आकि 'बड़ु चण्डीदास' (एहि दुनूक आवृत्ति मोटा-मोटी २ : ३ क अनुपातमे अछि), आ' छओ ठाम 'आनन्त (वा अनन्त) बड़ु चण्डीदास' तथा एक ठाम 'अनन्त नामे बड़ु चण्डीदास' आएल अछि। 'आनन्त' ई नाम समान रूपेँ समस्त काव्य मे पसरल अछि ओ ई कृत्रिम प्रक्षेप नहि बूझि पड़ैत अछि। अतः उचिते मानए पड़त जे 'आनन्त' कवि वा हुनक सम्पादकक (यदि एकर केओ सम्पादक छल होएताह तँ साहसपूर्वक अनुमान कए सकैत छी जे ई ओएह अनन्त आचार्य छल होएताह जे अद्वैतक शिष्य छलाह आ' 'श्री कृष्णकीर्तन'क भास पर दानलीला-विषयक गीत लिखने छथि) वैयक्तिक

---

१. **बड़ायिर पाणे कान्ह करिल गमन।**

२. **थिर-थिर करि राधार शिवरेर उरु कान्हि।**
(कलबल ओ अपन जाँघपरसँ राधाक सिर हटओलन्हि)

नाम छल तथा 'चण्डीदास/ बड़ु चण्डीदास' उपनाम वा उपाधि छलन्हि ।

एतए एक आपत्ति उठाओल जाए सकैत अछि । चण्डीदास' ई उपनाम वा उपाधि कोना होएत ? एकर समाधान अछि जे वर्तमान पाठानुसार एकर प्रयोग अनन्त (आनन्त) नामक आगाँ वस्तुतः उपनाम रूप मे कएल गेल अछि । परन्तु एहि आपत्तिक यथार्थता एहि तथ्य पर निर्भर अछि जे एतन्नामक केओ व्यक्ति वस्तुतः छलाह वा नहि, केवल नामे टा पर नहि । एहिमे की प्रमाण जे 'विद्यापति' ओ 'व्यास' जेकाँ 'चण्डीदास' सेहो उपाधि वा कविनाम नहि छल ? एकर तुलना प्राचीन ओड़िया कविताक 'सरलादास'सँ सेहो कएल जाए सकैत अछि । भनितामे सदा आराध्यरूपमे देवी वासली (चण्डीक दोसर नाम)क उल्लेख पाओल जाइत अछि (जकर शाब्द अर्थ 'चण्डीक सेवक' होइत अछि) । 'श्रीकृष्णकीर्तन'सँ एहन तीन गोट स्वरूपपरिचायक भनिता-खण्ड नीचाँ उद्धृत करैत छी:—

गाइल बड़ु चण्डीदास बासली गण,[1]
(भनथि बड़ु चण्डीदास, बासलीक परिचर) ।

गाइल बड़ु चण्डीदास बासली वर
(भनथि बड़ु चण्डीदास, बासलीक वर अर्थात् चुनल पुरुष) ।

गाइल बड़ु चण्डीदास बासली गति[1]
(भनथि बड़ु चण्डीदास, बासलीक दलक व्यक्ति) ।

आब व्यक्ति-नाम 'अनन्त' वा 'आनन्त' शब्दवाला भनिता देखल जाए :—

माथाए बन्दिआ बासली पाए
आनन्त बड़ु चण्डीदास गाए ।

(बासलीक चरणमे माथ झुकाए आनन्त (नामक एक) बटु (तथा) चण्डीदास गबैत छथि ।)

आनन्त नामे बड़ु चण्डीदास गायिल
देवी बासली गणे ।

---

१. 'गण' ओ 'गति' शब्दक अर्थ "मार्ग,पद्धति, उद्धार" सेहो होइत अछि । हम एतए गति (गोति) शब्दकेँ संस्कृत गोत्रिक (गोत्रसम्बन्धी)सँ उद्भूत मानलहुँ अछि ।

('अनन्त' नामक एक बड़ु (तथा) चण्डीदास गबैत छथि जे देवी बासलीक परिजन-वृन्दक एक व्यक्ति थिकाह)।

यदि आनन्तकेँ व्यक्ति-नाम मानि लैत छी तँ 'बड़ु चण्डीदास'क व्याख्या सरलतापूर्वक भए जाइत अछि। ततबे नहि, एहि व्याख्यासँ प्रस्तुत काव्यक मूल स्वरूप ओ कविक व्यवसाय पर सेहो प्रकाश पड़ैत अछि। 'बड़ु' शब्दक अर्थ थिक अभिनेता वा परिवारक अथवा कोनो व्यावसायिक दलक श्रेष्ठजन, आ' 'चण्डीदास'क अर्थ थिक एहन व्यक्ति जे चण्डीक (बासलीक) मन्दिर वा कोनो आयतनमे व्यावसायिक सेवक हो। १२७१ ई०क एक प्राचीन ओड़िआ अभिलेखमे उल्लिखित अछि जे कलिंग देशक सिमचल स्थानमे एक नृसिंह-मन्दिर छल, जाहिमे नर्तक - अभिनेता (नटुवा, मैथिली नटुआ) सभक एक पारिवारिक दल नियुक्त छल। एकर मुखिआ जेठ (बड़ु) भाए होइत छलैक। कल्पना कए सकैत छी जे जयदेवक उत्तर कालमे बंगालमे सेहो एहि प्रकारक नर्तक-अभिनेताक (नटुआक) परिवार होइत छल (आ' निश्चित रूपेँ जयदेव सेहो एहि प्रकारक एक पारिवारिक दलक मुखिआ छलाह)। एही प्रकारक एक दल 'चण्डीदास' नामक छल जकर आराध्यदेवी चण्डी छलैक (इएह 'बासली-गण' कहल गेल अछि)। ई दल कृष्णलीलाक अभिनयमे जे गीतसभ गबैत छल तकर प्रचलित भनिता सभसँ ई आभास भेटैत अछि। मंडलीक जेठ व्यक्ति वा मुखिआ बड़ु चण्डीदास जनिक व्यक्तिनाम अनन्त छलन्हि, ई गीत सभ (ई गीत-काव्यो ?) लिखने छलाह वा हुनक नामे लिखल गेल छल, आओर ई अनन्त सम्भवतः कौलिक गीतसभक उपयोग कएलन्हि। एहन कल्पना करब असंगत नहि होएत जे एहि प्रकारक चण्डीदास-मंडलीक केन्द्र गौड़क निकट कानाइ नाटशालमे जुटल छल जतए चैतन्य रामकेलिसँ घुरबाक काल ओहि मंडलीक प्रदर्शन देखने छलाह।

पूर्वमे कहि चुकल छी जे 'श्रीकृष्णकीर्तन'क राधा-विरह खण्डमे चैतन्यक सन्दिग्ध चर्चाक आधारपर तथा भाषात्मक वैशिष्ट्यक अतिरिक्त अन्यान्यो आधारपर ई कृष्णकीर्तन अपेक्षाकृत परवर्ती कालक प्रतीत होइत अछि। एहिसँ ई कल्पना कएल जाए सकैत अछि जे चैतन्य जे अभिनय देखने छलाह आ' जे गीतसभ जनैत छलाह तकर रचयिता अनन्त नहि, अपितु हुनक केओ पूर्वज वा पूर्वाधिकारी छलाह जे 'आदिम चण्डीदास' छल होएताह।

वर्तमान शताब्दीक चतुर्थ दशकक आदि भागमे कलकत्ता विश्वविद्यालयक हस्तलेख-संग्रह मध्य बहुत हालकेर जे दू हस्तलेख (एक १८३० ई०क) ब्रह्मपत्र नहि, किन्तु पोथी जेकाँ नाथल भेटल अछि, से 'चण्डीदास' साहित्यक विद्वान्लोकनि मध्य हलचल मचा देलक। ई दूनू हस्तलेख वस्तुतः संगीतक ताल सिखनिहार छात्रलोकनिक अभ्यास-पुस्तक थिक। 'श्रीकृष्णकीर्तन'क एहि हस्तलेखमे लगभग सत्ताइस गोट पद अछि, जाहिमे सतरह गोट अल्प रूप-भेदक संग, 'श्रीकृष्णकीर्तन'मे पाओल जाइत अछि;ओ शेष दस अनुमान कएल जाए सकैत अछि जे उक्त प्रबन्धक लुप्त भागमे छल होएत। ई दूनू हस्तलेख ओहि संग्रहमे छल जे 'श्रीकृष्णकीर्तन'क आविष्कर्ता संगृहीत कएने रहथि। एहि आविष्कारसँ ई सिद्ध लेल जे 'श्रीकृष्णकीर्तन'क गीत-सभ वर्तमान शताब्दीक आरम्भिक कतिपय दशक पूर्व धरि वस्तुतः अज्ञात नहि छल। ई आविष्कार एहि धारणापर कुठारघात कए देलक जे 'श्रीकृष्णकीर्तन' धूमिल अतीतक एक विरल ध्वंसावशेष थिक आ' ओ परवर्ती कालक वैष्णव कीर्तन-क्रियाकलापसँ सम्बद्ध नहि अछि। तथापि एहिसँ एक बात समर्थित होइत अछि, जाहि दिस पूर्वमे ककरो ध्यान नहि गेल छल, जे 'श्रीकृष्णकीर्तन'क हस्तलेख वस्तुतः ततेक पुरान नहि थिक जतेक मानल जाए रहल अछि, आ' एकर कागज, मोसि ओ अक्षराकृति कोनो वस्तु एकरा अठारहम शताब्दीक मध्यसँ पूर्वक सिद्ध करबामे समर्थ नहि अछि, आ' इएह काल एकर भाषात्मक साक्ष्यसँ सेहो सिद्ध होइत अछि।

पूर्वमे कहि आएल छी जे चण्डीदासक गीत-सभक, ओ किछु 'श्रीकृष्ण-कीर्तन'क गीत-सभक कतोक छिटफुट द्विपदी सभ ध्रुवगीत ('धुया')क रूपमे अठारहम शताब्दीमे प्रचलित छल। प्राचीन कीर्तन-संग्रह सभमे सेहो कोनो एहन गीत अछि जे मूलतः चण्डीदासक कवितामे छल होएत। एक गीत अनुवाद रूपमे एतए उद्धृत कए रहल छी। ई नरहरि चक्रवर्तीक 'गीतचन्द्रोदय'मे समाविष्ट अछि (जकर संकलन अठारहम शताब्दीक आदि भागमे भेल होएत) :—

(अहाँक) प्रेमी गुणक निधान छथि, ओ सतत अहाँक नाम रटैत रहैत छथि।
जँ अहाँक नाम हुनका कानमे पड़ैत छन्हि तँ ओ आनन्दसँ विह्वल भए जाइत छथि।

हुनक आँखिमे नोर आबि जाइत छन्हि आ' ओ तकरा झँपबाक
हेतु मुह घुमाए लैत छथि ।
जँ केओ कोनो बात पुछैत छन्हि तँ ओ हाथ उनटाए दैत छथि ।
हम जे कहैत छिअइ से करह, अन्यथा नहि मानह ।
ओ आब अघोर भए गेलाह अछि—बडु चण्डीदास कहैत छथि ।

---

७. उपसंहार

पूर्वमे जे विवेचन कएल गेल अछि ताहिसँ हम आशा करैत छी ई प्रतिपादित करबामे समर्थ भेल छी जे 'चण्डीदास' एक एहन नाम थिक जकर प्रयोग एककालीन वा बहुकालीन अनेक व्यक्तिमे साधुतया कएल जाए सकैत अछि।

बहुकालीनतया कम-सँ-कम तीन सनामा कवि भेलाह अछि जे उनैसम शताब्दीसँ पूर्व विद्यमान छलाह। एहिमे एक थिकाह प्राचीन चण्डीदास जनिक प्रशंसा चैतन्य ओ हुनक मित्रलोकनि कएने छथि। दोसर छलाह ब्राह्मण (द्विज) चण्डीदास जे नरोत्तमदासक शिष्य छलाह। तेसर छलाह तान्त्रिक वैष्णव चण्डीदास जे कविता तँ कमे लिखलन्हि किन्तु रहस्यवादी गीत प्रचुर मात्रामे लिखलन्हि। तेसर चण्डीदास सम्भवतः ओएह व्यक्ति थिकाह जे राधा-कृष्ण-प्रणयविषयक अपन कतोक कीर्तनमे 'तरुणीरमण' उपनाम देने छथि।

एहिसँ अतिरिक्तो कतोक कविमन्य नकलनवीस सभ भेलाह अछि जे दीन चण्डीदास, हीन चण्डीदास, क्षीण चण्डीदास, दीन-क्षीण चण्डीदास वा स्वभावतः सोझे चण्डीदासक भनिता दए कूड़ा-कुरकुटक ढेर लगओने छथि। ओ जे छापाक मुह देखलक ओ किछु समय कतोक विद्वान्-लोकनि जे ओकर 'गम्भीर' अध्ययन कएलन्हि से बहुधा एही कारणे जे ओहिमे चण्डीदासक भनिता अछि।

एककालीनतया चण्डीदास एक दल (गण, गति) छल, वा कहि सकैत छी जे कविलोकनिक, गायक-लोकनिक, नटुआ आओर/ वा भाँड़-लोकनिक तथा कठपुतरी-प्रदर्शक-लोकनिक एक मण्डली छल, जे राधा तथा अन्यान्य गोपी सभक संग कृष्णक प्रणय लीलाक अनेक संगीतरूपकक संग्रह रखने छल। ओहि रूपकक मूल स्वरूप, जे 'श्रीकृष्णकीर्तन'क रूपमे हमरा-लोकनिकेँ परम्परया प्राप्त अछि, सम्भवतः जयदेवक 'गीतगोविन्द'-सन वा ताहूसँ बाढ़ि उमापतिक 'पारिजातहरण'-सन (किन्तु संस्कृत नाटकक साँचमे नहि) छल,

जाहिमे अभिनेय ओ गेय पद-सभ कथाकेँ आगाँ बढ़ओनिहार संस्कृत श्लोक सभक सूत्रमे ग्रथित रहैत छल। एहन मण्डलीक कवि 'चण्डीदास' कहबैत रहथि, मुदा ई निश्चयपूर्वक ज्ञात नहि अछि जे ई हुनक व्यक्ति-नाम छल वा उपाधि।

प्रथम चण्डीदास उत्तम कवि रहथि आ' द्वितीय चण्डीदास सेहो एही कोटिक छलाह। एहि दूनूमे के बीस से कहब कठिन। कालिदासक एक अज्ञातनामा प्रशंसकसँ क्षमा-याचना करैत अन्तमे हम कहि सकैत छी जे

एकोऽपि जीयते हन्त चण्डीदासो न केनचित्।
शृंगारे व्रजलीलायां चण्डीदासद्वयी किमु॥

("एको चण्डीदास आन ककरहुसँ दब नहि।
व्रजप्रणयलीलाक वर्णनमे दू चण्डीदासक कथे कोन।")

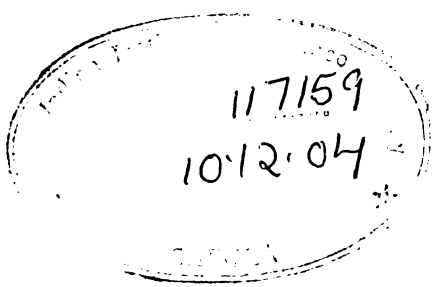

भारतीय साहित्यक निर्माता

भारतीय साहित्यक इतिहास-यात्रामे अपन महत्वपूर्ण पदचिह्न जे केओ छोड़ि गेलाह अछि—पुरना किंवा नवका साहित्यनिर्मातालोकनि तनिका सभक परिचय देबाक लक्ष्य सोझाँ राखि एहि ग्रन्थमालाक आयोजन कएल गेल अछि।

एहि मालाक प्रत्येक पोथीमे कोनो एकटा एहन विशिष्ट भारतीय लेखकक जीवन ओ कृतित्वक बखान कएल जाइछ जे अपन भाषाक माध्यमसँ भारतीय साहित्यक उन्नति ओ विकासमे स्थायी एवं मूल्यवान योग देने छथि।

एहि क्रममे मैथिली लेखक पर ओ मैथिली भाषामे एखन धरि जे पुस्तक प्रकाशित भेल अछि तकर विवरण नीचाँ देल जाइत अछि :—

मूलतः अङरेजीमे :—

विद्यापति	:	रमानाथ झा
चन्दा झा	:	जयदेव मिश्र

मूलतः मैथिलीमे :—

सीताराम झा	:	भीमनाथ झा

मैथिलीमे अनूदित :—

नामदेव	:	माधव गोपाल देशमुख
ईश्वरचन्द्र विद्यासागर	:	हिरण्मय बनर्जी
काजी नकरुल इस्लाम	:	गोपाल हालदार
जयदेव	:	सुनीति कुमार चटर्जी